नवम्बर 2018

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

जन्मजयंती
विशेषांक

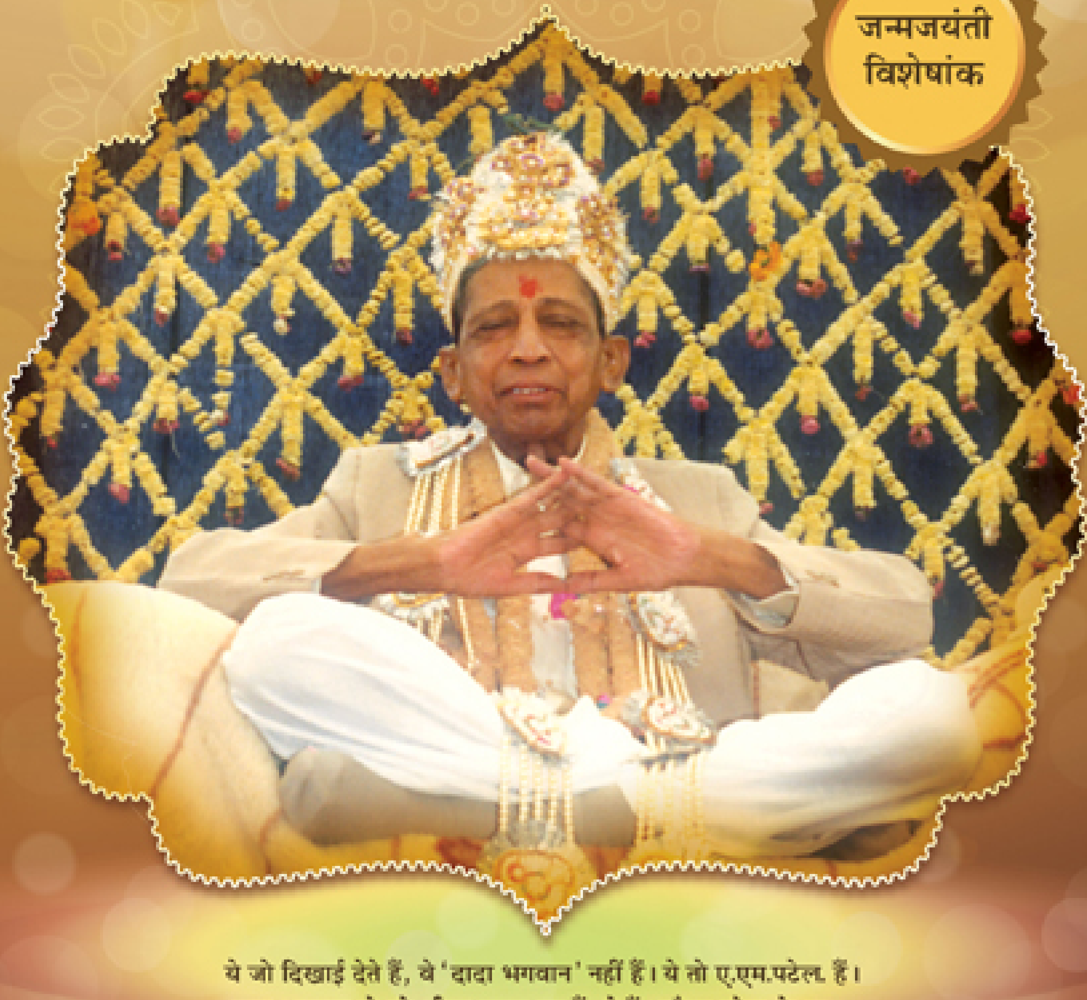

ये जो दिखाई देते हैं, वे 'दादा भगवान' नहीं हैं। ये तो ए.एम.पटेल हैं।
दादा भगवान तो जो भीतर प्रकट हुए हैं, वे हैं। चौदह लोक के नाथ,
ऐसे ज्ञानी पुरुष के दर्शन से उच्चतम अभ्युदय और आनुषंगिक फल प्राप्त होता है।

वर्ष : 13 अंक : 1
अखंड क्रमांक : 157
नवम्बर 2018
Total 40 pages (including cover)

Editor : Dimple Mehta
© 2018
Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

ज्ञानी दर्शन से साध्य खुद का स्व-दर्शन

संपादकीय

श्रीकृष्ण भगवान ने कहा है कि, 'ज्ञानी पुरुष ही मेरा आत्मा है।' परम पूज्य दादाश्री हमेशा कहते कि, ये जो दिखाई देते हैं, वे तो भादरण के पटेल हैं, जबकि हम तो ज्ञानी पुरुष हैं। इस काल की वजह से हमारा केवलज्ञान 356 डिग्री पर रुका हुआ है और भीतर जो प्रकट हुए हैं, वे चौदह लोक के नाथ हैं, और जो 360 डिग्री वाले पूर्ण भगवान हैं। मैं भी उनकी भजना करता हूँ न, और आपसे भी कहता हूँ कि आप दर्शन कर जाओ।

मन-वचन-काया से निरंतर मुक्त दशा में रहने वाले ज्ञानी पुरुष का प्राकट्य इस काल का सब से बड़ा आश्चर्य है। जो निरंतर द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और भव से अप्रतिबद्ध रूप से विचरण करते हैं ऐसे ज्ञानी जो कि निरंतर खुद के स्व-स्वभाव में ही रहते हैं, ऐसे ज्ञानी पुरुष के दर्शन करने योग्य हैं। लेकिन वे दर्शन कैसे... यदि यथार्थ रूप से पहचानकर दर्शन करोगे तो काम आएगा। दादाश्री कहते हैं कि इस काल के लोगों को तो जहाँ यह भी समझ में नहीं आता है कि चाय चीनी की है या गुड़ की तो वे बेचारे ज्ञानी को कैसे पहचानेंगे? ज्ञानी पुरुष को पहचान पाना क्या कोई आसान बात है? वह तो, जब हृदय उतना शुद्ध हो जाए तब पहचान होती है।

प्रस्तुत अंक में दर्शन का अर्थ, किसके दर्शन करने हैं, ज्ञानी और दादा के दर्शन की कड़ियाँ, ज्ञानी को किस दृष्टि से देखें, दर्शन बुद्धि से या हृदय से, अभेद दर्शन का सही तरीका, यथार्थ दर्शन से क्या फल मिलता है, दर्शन मात्र से ही बदलाव वगैरह सभी के बारे में विशेष समझ प्राप्त होगी। परम पूज्य दादाश्री कहते हैं कि अनंत जन्मों के नुकसान की भरपाई इस एक जन्म में करनी है। इसलिए हमारी दी हुई पाँच आज्ञाओं का पालन करो और हमारे पास आकर यथार्थ दर्शन करो तो सबकुछ चुकता हो जाएगा।

दादाश्री कहते थे कि अपने यहाँ तीन दिन उत्तम हैं, नया साल, गुरु पूर्णिमा और जन्मजयंती। इन दिनों दादा व्यवहार में नहीं पड़ते हैं। ज्ञानी पुरुष दादा भगवान के साथ पूर्ण स्वरूप में एकाकार रहते हैं और इन दिनों के दर्शन से उत्तम फल मिलता है इसलिए परमात्मा के दर्शन का यह अवसर मत चूकना। ज्ञानी पुरुष का जन्म हुए 110 साल बीत गए। इस साल 22 नवम्बर 2018, कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, चौदस के दिन, हम सभी को 111वीं जन्मजयंती महोत्सव के अवसर पर 'दादा भगवान' के अलौकिक दर्शन होंगे।

कृपालुदेव ने कहा है कि, 'ज्ञानी पुरुष तो प्रकट देहधारी परमात्मा हैं।' प्रकट को देखते ही उस रूप बन जाते हैं, भीतर शक्तियाँ प्रकट हो जाती हैं। उनके पास तो खुद, अपने खुद के ही दर्शन कर लेने हैं। जब हमें प्रकट ज्ञानी पुरुष दादा भगवान से आत्मज्ञान प्राप्त हुआ है, तो अब उनके यथार्थ दर्शन करके, कृपा पात्र बनकर, इस जन्म को सार्थक करके, मोक्ष के पंथ पर प्रगति कर सकें यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

ज्ञानी दर्शन से साध्य खुद का स्व-दर्शन

बीज बोने के बाद यदि पानी न छिड़का जाए तो...

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद भी 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा याद करना पड़ता है, जो ज़रा मुश्किल लगता है।

दादाश्री : नहीं, याद नहीं करना पड़ता, अपने आप ही रहता है। इसके लिए क्या करना चाहिए? उसके लिए मेरे पास आना-जाना पड़ेगा। उस पर जो पानी छिड़कना चाहिए वह नहीं मिल पाता इसलिए यह सब मुश्किल हो जाता है। यदि आप व्यापार में ध्यान नहीं दोगे तो व्यापार का क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : ठप्प हो जाएगा।

दादाश्री : हाँ, यह भी वैसा ही है। ज्ञान लेने के बाद उस पर पानी छिड़कना पड़ता है तभी पौधा बढ़ेगा। पौधा होता है न छोटा, उसे भी पानी देना पड़ता है। आप तो कभी महीने, दो महीने में ज़रा सा पानी छिड़कते हैं।

प्रश्नकर्ता : घर पर छिड़कते हैं न!

दादाश्री : नहीं! यों घर पर छिड़कने से नहीं चलेगा। ऐसा चलता है क्या? ज्ञानी खुद यहाँ आए हैं और हमें उनकी वैल्यू(कीमत) ही नहीं! स्कूल गए थे या नहीं? कितने साल तक गए थे?

प्रश्नकर्ता : दस साल।

दादाश्री : क्या सीखे उसमें? भाषा! इस अँग्रेजी भाषा सीखने में दस साल लगा दिए तो यहाँ मेरे पास तो छ: महीने ही कह रहा हूँ, अगर छ: महीने मेरे साथ रहे न, तो काम बन जाएगा।

ज्ञानी के दर्शन मात्र से ही छुटकारा

प्रश्नकर्ता : पूर्णपद की प्राप्ति के लिए महात्माओं को क्या गरज़ रखनी चाहिए?

दादाश्री : जितना बन पड़े उतना जीवन 'दादा' के पास गुज़ारना है यही गरज़, दूसरी कोई गरज़ नहीं। 'रात-दिन, चाहे कहीं भी, मगर 'दादा' के पास ही रहना है। उनकी विसिनिटी में (दृष्टि पड़े, ऐसे) रहना है।'

ज्ञानी को तो देखते ही रहना है, ज्ञानी के तो मात्र दर्शन ही करने हैं। उनके दर्शन मात्र से ही छुटकारा हो सकता है लेकिन इस काल के मनुष्यों में दर्शन करने की भी शक्ति नहीं है इसलिए हमें ज्ञान देना पड़ता है। ऐसा है कि ज्ञानी पुरुष के दर्शन मात्र से तो सर्वस्व प्राप्त हो सकता है।

ज्ञानी की उपस्थिति में बरतता है आनंद

प्रश्नकर्ता : जिसने सिर्फ, दादा के दर्शन किए हों और ज्ञान नहीं लिया हो, उसका फिर क्या होता है?

दादाश्री : तो उसे फिर से कोई अन्य ज्ञानी मिल जाएँगे। यदि ये दर्शन किए होंगे तो उसे

मिलेंगे। शायद अगर किसी को ज्ञान नहीं दिया हो और वह रोज़ यहाँ बैठा रहे, तब भी उसका पंद्रह जन्मों में मोक्ष हो जाएगा। ज्ञान तो सभी को समझ में नहीं आता लेकिन सिर्फ दर्शन से ही सारा परिवर्तन हो जाता है।

मेरा ज्ञान मिले या न मिले, उसमें कोई हर्ज नहीं है, संसार सुंदर हो जाएगा, उसके पाप धुलने लगेंगे। ज्ञानी पुरुष के दर्शन करते ही दोषों को ताप लगता है। अभी देखो न, भीतर आनंद रहा न? हुआ था न आनंद?

प्रश्नकर्ता : हाँ....

दादाश्री : ज्ञानी पुरुष मिलते ही कहाँ है? दस लाख सालों में दिखाई दे ऐसा है यह आश्चर्य। वे कहाँ से मिलेंगे?

'ज्ञानी पुरुष' शल्य रहित होते हैं। वे खुद प्रसन्न चित्त हैं, इसलिए, सामने वाले को भी उन प्रसन्न चित्त के दर्शन करने से ही आनंद प्रकट हो जाता है। 'ज्ञानी' के दर्शन मात्र से अनेक जन्मों के पाप भस्मीभूत हो जाते हैं!

दुःख ना जाए तो, ये दादा नहीं

प्रश्नकर्ता : लेकिन इससे पहले जो पाप कर्म किए हों उनका रूपक तो आएगा न कभी न कभी...

दादाश्री : पाप कर्म किए हैं इसीलिए कुछ याद नहीं आता था। पुस्तक में से समझा हो, फिर भी भूल जाते हैं। क्या हो सकता है? जागृति नहीं रहती थी। तब ये पाप कर्म काट रहे थे। चिंता कौन करवा रहा था? पाप कर्म। उन पाप कर्मों को भस्मीभूत कर दिया और वह चिंता बंद हो गई। इसीलिए कृष्ण भगवान ने गीता में कहा है, कि 'ज्ञानी पुरुष बंडल बनाकर पापों का नाश कर देते हैं।' और कहते हैं यदि यह समझ में आ जाए कि 'ज्ञानी ही मेरा आत्मा हैं यानी कि मैं ही हूँ', तो निबेड़ा आ जाएगा वर्ना, क्या निबेड़ा आ सकता है?

प्रश्नकर्ता : यदि कर्म और उनके परिणाम निश्चत हैं तो जो पाप किए हैं, वे ज्ञानी पुरुष के दर्शन से भस्मीभूत किस तरह से होते हैं? ज्ञानी पुरुष के दर्शन किस प्रकार से अधिक क्रियाकारी हो सकते हैं?

दादाश्री : ये दर्शन करने से मन अच्छा रहता है, मन मज़बूत हो जाता है, वाणी अच्छी हो जाती है, विचार अच्छे हो जाते हैं। उस समय सारे विचार एकदम से शुभ विचारों में बदल जाते हैं, उन्हें देखते ही। उनके वातावरण का असर होता है। उस समय वे जो परमाणु हैं, जो अभी फल देने के लिए तैयार नहीं हुए हैं, फल देने के लिए तैयार होने वाले हैं, वे नष्ट हो जाते हैं एकदम से। यदि वे फल देने के लिए तैयार हो चुके हों तो उनमें कुछ बदलाव नहीं होता। हाँ, लेकिन वे हल्के हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : तलवार का घाव सुई जैसा लगता है, उस तरह से।

दादाश्री : भुगतने में बहुत फर्क पड़ जाता है। दादा के दर्शन करने के बाद यदि दुःख न जाए तो फिर ये दादा नहीं। हमने एक व्यक्ति से कहा था कि 'भाई, कोई दर्शनभाव से (आत्मभाव से) एक ही बार हमारे दर्शन कर जाएगा और यदि उसका दुःख नहीं जाए तो ये दादा नहीं।' उसका दुःख जाना ही चाहिए, हाँ....

ज्ञानी पुरुष के परमाणुओं का स्पर्श होते ही बदलाव

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी पुरुष की शरण में आने से पाप नष्ट हो जाते हैं, इसे लॉजिकली समझाइए कि किस तरह से पाप नष्ट हो जाते हैं?

दादाश्री : कोल्ड स्टॉरेज होता है न! गरमी के दिनों में जब बहुत तेज़ गरमी होती है लेकिन यदि हम कोल्ड स्टॉरेज में जाएँ तो हमें क्या होगा? गरमी का नाश हो जाएगा या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हो जाएगा।

दादाश्री : तब अगर आप पूछो कि गरमी का नाश कैसे हुआ? आप खुद ही अनुभव करो न कि यह कैसे हुआ! कोल्ड स्टॉरेज में घुसने से गरमी का नाश, इतनी तेज़ गरमी थी लेकिन अंदर घुसते ही गरमी का नाश हो गया न? किसने किया? स्वभाविक रूप से ही हो हो गया। मैं इन पापों का नाश नहीं करता। स्वाभाविक रूप से, इन्हें देखते ही, ज्ञानी पुरुष के दर्शन करने से। दर्शन किए, ऐसा कब कहा जाएगा? कि जब भीतर कुछ श्रद्धापूर्वक, 'ये सही कह रहे हैं।' 'ये जो कह रहे हैं, उसमें एकाध वाक्य तो सही है,' इतनी भी श्रद्धा यदि उत्पन्न हो जाए तब भी उसे फल मिलेगा लेकिन यदि उसके मन में ऐसा लगे कि इसमें एक भी बात सही नहीं है तो फल नहीं मिलेगा।

प्रश्नकर्ता : इसमें ऐसा है कि एयर-कन्डिशन में जाने से गरमी कम हो जाती है वह तो एक वैज्ञानिक चीज़ है। इसमें क्या विज्ञान है?

दादाश्री : हमारे हाथ का स्पर्श होते ही उसमें क्या से क्या बदलाव आ जाता है। सिर्फ हाथ के स्पर्श से ही, कितनों को तो जब सिर पर हाथ रखते हैं तो बाद में वे आकर मुझसे कहते हैं कि, 'तीन दिनों तक मुझे समाधि ही रही।' ज्ञानी पुरुष का एक-एक परमाणु कैसा होता है? जिनके चरणों में प्रत्यक्ष मोक्ष होता है। प्रत्यक्ष मोक्ष उनके चरणों में क्यों? तब कहते हैं कि इस संसार में किसी के चरण नहीं छू सकते। यदि इन अंहकारियों के चरण छूएँगे तो उनका अंहकार बढ़ जाएगा। जिनका अंहकार नहीं बढ़े, ऐसे जो हों, उनके चरणों में नमस्कार करना तो आपका निबेड़ा आ जाएगा इसीलिए ज्ञानी पुरुष के स्पर्श से सभी पाप भस्मीभूत हो जाते हैं।

यदि एक ही अकषायी व्यक्ति के दर्शन किए जाएँ तो पाप यों ही धुल जाते हैं! 'ज्ञानी पुरुष' के अलावा अन्य कोई व्यक्ति अकषायी हो ही नहीं सकता। एक ही बार कषाय रहित 'ज्ञानी पुरुष' के दर्शन हो जाएँ, तभी से मोक्ष की शुरुआत हो गई। कषाय रहित किसे कहते हैं? जिनकी स्थिति ऐसी हो जाए कि उनमें कषाय था नहीं, है नहीं और होगा भी नहीं, उन्हें। अर्थात् जिनमें 'पर-परिणति' है ही नहीं। उनके 'दर्शन' करने से कल्याण हो जाता है।

समा जाते हैं सारे परिणाम ज्ञानी के समीप

प्रश्नकर्ता : चाहे कैसे भी परिणाम उत्पन्न हुए हों लेकिन जैसे ही बाहर से अदंर आकर दादा के दर्शन करते हैं, तो दर्शन मात्र से ही सारे परिणाम समा(स्वरूप में स्थिर हो) जाते हैं। उसका क्या रहस्य है?

दादाश्री : ये दर्शन तो अद्‌भुत हैं न! ऐसा है न, वहाँ पर यदि बर्फ रखी हो, तो वहाँ से बहुत ठंडी हवा आएगी। तब हम किसी से कहें कि 'देखो न, बाहर हवा कैसी है? बर्फ जैसी हो गई है?' तब कहेंगे, 'नहीं, बाहर तो इतनी ठंडी हवा नहीं है।' तब हम समझ जाएँगे कि यहाँ पर बर्फ रखा होगा। यदि बर्फ का इतना असर है तो ज्ञानी पुरुष का, वे जहाँ पर रहते हों उस जगह का और उसके आसपास का वातावरण....!

प्रश्नकर्ता : जागृति में पूरा ही बदलाव हो जाता है। एकदम से बढ़ जाती है।

दादाश्री : हाँ, पूरा बदलाव हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : अदंर यों स्थिरता भी बहुत बढ़ जाती है।

दादाश्री : हाँ। स्थिरता भी ज़बरदस्त रहती है। अत: वह उच्च प्रकार का वातावरण कहलाता है। ज्ञानी पुरुष, की तो बात ही क्या? और यदि वह नहीं समझ पाता तो यह सब यों ही नासमझी में चला जाएगा। उस पर असर तो होता ही है लेकिन यह किसका असर है, वह पता नहीं चलता। इसी तरह लोगों को अपनी-अपनी समझ के अनुसार असर होता है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् यह जो प्रकट स्वरूप हुआ है, उसका लाभ सामने वाले की समझ के अनुसार मिलता है, ऐसा कहना चाहते हैं?

दादाश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : उसे समझ हो या न हो पर बर्फ ठंडक दिए बिना नहीं रहेगी।

दादाश्री : हाँ! ठंडक देती है लेकिन वह तो ऐसा ही समझता है कि यह सब वातावरण की वजह से है। बाकी कुछ समझ में नहीं आता। उसे खुद यह सही समझ में नहीं आता कि यह ठंडक कहाँ से आ रही है। इतनी अधिक शक्ति नहीं होती मनुष्य में। वह तो, जो खोज करने निकला है और यदि उसमें परीक्षण करने की शक्ति है तो समझ में आएगा, बाकी लोगों के बस की बात नहीं है।

पहचानते ही बेड़ा पार

प्रश्नकर्ता : जो आपके दर्शन करने आते हैं वे ज्ञानी के दर्शन करते हैं या ज्ञानी के ज्ञान के?

दादाश्री : वे ज्ञानी और ज्ञान, दोनों के दर्शन करते हैं। यदि दोनों के नहीं करेंगे तो अधूरा रहेगा। ज्ञानी के दर्शन करने की ज़रूरत है, और ज्ञान के दर्शन कब होते हैं? पहले ज्ञानी के दर्शन करते हैं। उसके बाद ज्ञान के दर्शन होते हैं, वह विवेक है, विनय है, साथ में उतना विनय होना चाहिए। यदि भान सहित देखोगे तो आपका हल आ जाएगा। वर्ना, यदि कलेक्टर देखोगे तो कलेक्टर जैसे बनोगे। ज्ञान की प्राप्ति करने के लिए 'ज्ञानी' को पहचान! और कोई रास्ता नहीं है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी को पहचानना ही सब से बड़ी बात है, ऐसा कहना है न आपका?

दादाश्री : हाँ, वही सब से बड़ी बात है। बहुत बड़ी बात है! पहचानने से तो बेड़ा पार हो जाता है! लेकिन अब, यदि पहचान ना सके, तब अगर आपके जैसे इसे कहें न, कि 'भाई, पहचान लो और ठीक से दर्शन करना,' तब फिर इसकी गाड़ी चलने लगेगी।

आपका कुछ तो निश्चय रहा होगा, इसीलिए ये ज्ञानी पुरुष मिले। वर्ना, ज्ञानी पुरुष के दर्शन दुर्लभ, दुर्लभ, दुर्लभ, सौ बार दुर्लभ, कृपालुदेव ने कहा है, 'जो अच्छे काल में भी दुर्लभ हैं, वे इस काल में सुलभ कैसे होंगे,' यह तो इसलिए कि कुछ सच्ची आराधना की होगी, वर्ना कहीं ज्ञानी पुरुष मिलते हैं? कृपालुदेव ने क्या कहा है कि, 'ज्ञानी पुरुष तो देहधारी परमात्मा ही हैं।'

अब, फिर से मनुष्यपन मिलना मुश्किल है। आप इस ज़माने में मुझे मिले, वही कितना बड़ा आश्चर्य है! कोटि जन्मों के, कितना ज़्यादा ग़ज़ब का पुण्य हो, तब मुझ से मिल पाते हैं! वर्ना, इन दादा के दर्शन नहीं हो सकते, जिनके भीतर पूरे ब्रह्मांड के भगवान संपूर्ण रूप से प्रकट हो चुके हैं! जो माँगो, वे वह देने को तैयार हैं। ये तो किसी को मिल ही नहीं सकते। ये आपको किस कारण से मिले? वह भी आपका ज़बरदस्त पुण्य है। नहीं?

दर्शन मात्र से अभ्युदय-आनुषंगिक फल

कविराज ने गाया है :

'सत्संग छे पुण्य संचालित, चाहूँ अभ्युदय आनुषंगिक।'

'ज्ञानी पुरुष' से मिलते ही दो फल मिलते हैं : एक 'अभ्युदय' यानी संसार में अभ्युदय होता जाता है, संसारफल मिलता है और दूसरा, 'आनुषंगिक' यानी मोक्षफल मिलता है। दोनों फल साथ में मिलते हैं। यदि दोनों फल साथ में नहीं मिलें तो वे 'ज्ञानी पुरुष' नहीं हैं। यह तो, बेहिसाब ओवर ड्राफ्ट है इसलिए दिखाई नहीं देता। यह सत्संग करते हो, तो वे ओवर ड्राफ्ट पूरे होंगे ही।

यहाँ सिर्फ मोक्षफल ही नहीं है, यदि ऐसा होता तब तो एक कपड़ा भी पहनने को नहीं मिलता। लेकिन नहीं, मोक्षफल और संसारफल दोनों साथ में हैं।

राजा के वहाँ सर्विस लग जाए और राजा से मिलने जाएँ तो दृष्टिफल मिलता है। नौकरी करने की तनख़्वाह मिलती है, वह सेवाफल है। सेवाफल में तो राजा से ढाई सौ रुपये मिलते हैं। राजा को वंदन करके आया, इसीलिए तो दृष्टिफल मिलता है! दृष्टिफल यानी राजा की दृष्टि पड़े और वे भाई से पूछें कि, 'आप कहाँ रहते हो?' यह जानने के बाद उसे रहने के लिए अच्छी जगह मिल जाती है, वह दृष्टिफल है। सिर्फ राजा की दृष्टि से ऐसा फल मिलता है तो 'ज्ञानी पुरुष' की दृष्टि से क्या नहीं मिल सकता? राजा तो अपूर्ण है, उसे तो राज्य बढ़ाने का लालच है, जबकि ये तो 'ज्ञानी पुरुष' हैं, जो संपूर्ण रूप से निरीच्छक दशा में बरतते हैं! और उनकी दृष्टि का फल तो कैसा होता है? यहाँ सत्संग में आया, तो यहाँ से वह अवश्य दृष्टिफल लेकर ही जाता है।

यदि वीतराग भगवान के दर्शन करना आए, तो भले ही वे मूर्ति हैं, फिर भी अभ्युदय और आनुषंगिक फल मिलता है! लेकिन वह दर्शन करना तो, जब 'ज्ञानी पुरुष' समझाएँ तब आता है। वर्ना, किसी को आता नहीं है न? 'ज्ञानी पुरुष' के दर्शन के लिए तो कोटि जन्मों के पुण्य का चेक भुनाना पड़ता है। हज़ारों सालों में 'ज्ञानी पुरुष' प्रकट होते हैं और उसमें भी ये तो 'अक्रम ज्ञानी,' यानी कोई जप-तप नहीं और बिना मेहनत के मोक्ष! 'ज्ञानी पुरुष' से दृष्टिफल मिलता है और उससे मोक्षफल मिलता है।

'ज्ञानी पुरुष' के दर्शन किए उससे तो सब से बड़ा फल, अभ्युदय और आनुषंगिक मिलते हैं और उससे तो उच्चतम प्रकार की शांति रहती है! संसार के विघ्न बाधक नहीं होते और मोक्ष का काम होता है, दोनों साथ में ही होते हैं।

व्यवस्थित का नियम है, फिर भी यदि मेरे दर्शन कर जाएगा तो आने वाले विघ्न हल्के हो जाएँगे। मेरे दर्शन मात्र से ही सारे अंतराय टूट जाते हैं।

अभेद दर्शन से विलय होता है अहंकार, व *आड़ाई*

ज्ञानी पुरुष के दर्शन करते हैं, तभी से आत्मा प्राप्त होने की शुरुआत हो जाती है। कैसे? सिर्फ, दर्शन मात्र से! कवि क्या कहते हैं कि, 'यदि एक बार हाथ जोड़कर उन्हें वंदन करोगे, तब भी बेड़ा पार हो जाएगा। साष्टांग नमस्कार नहीं, यदि हाथ जोड़कर वंदन करोगे तब भी बेड़ा पार हो जाएगा।'

ज्ञानी पुरुष को हाथ जोड़ने का अर्थ यह है कि व्यवहारिक अहंकार शुद्ध किया और उनके अँगूठे पर मस्तक लगाकर सच्चे दर्शन किए, उसका अर्थ है अहंकार अर्पण किया। जितना अहंकार अर्पण होता है, उतना काम बन जाता है। दर्शन मात्र से।

प्रश्नकर्ता : आपके दर्शन मात्र से ही अहंकार निकल जाता है?

दादाश्री : हाँ, दर्शन मात्र से ही चला जाता है। इनके दर्शन ही नहीं मिलते। ये कौन हैं? लघुत्तम पुरुष! लघुत्तम पुरुष के दर्शन कहाँ से मिलेंगे? सभी गुरु बनते हैं और गुरुत्तम तक पहुँचे हुए हैं। लघुत्तम के दर्शन मिलते हैं क्या कभी? लघुत्तम के दर्शन मिलते हैं? क्यों नहीं बोलते? वर्ल्ड में एक भी ऐसा व्यक्ति ढूँढ लाओ जो लघुत्तम हो। हम लघुत्तम पुरुष हैं। सभी जीव हमसे बड़े हैं और इन सभी के, ये जो पचास हज़ार लोग हैं न, उन सभी के हम शिष्य हैं।

अगर आप यहाँ पर आकर दर्शन करोगे न, तो दर्शन से आपको वे सारी चीज़ें मिलेंगी जो मेरे पास हैं। ऐसे ही, सिर्फ दर्शन से ही मिल जाएँगी। आपको और कुछ नहीं करना है। सिर्फ, दर्शन से ही, दर्शन से ही मिल जाएगी लेकिन वे दर्शन कैसे? अभेद दर्शन होने चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादा के दर्शन के बाद आड़ाई (*टेढ़ापन*) वगैरह सब चला जाता है?

दादाश्री : उसे पता नहीं है कि चला जाता है। अगर पता होता तो वह आए बगैर रहेगा ही नहीं न! सिर्फ, दर्शन से ही पूरी आड़ाई चली जाती है। यहाँ पास बैठने से सीधा हो जाता है। फिर भी बाहर जाकर कुरेदता रहता है। भाई, यहाँ बैठ न, बाहर क्यों कुरेद रहा है? वहाँ पर भान ही नहीं रहता न। तो अब लाभ उठा लेना।

ज्ञानी पुरुष तो अंतिम स्टेशन

ज्ञानी पुरुष के दर्शन करने से आर्तध्यान व रौद्रध्यान चले जाने चाहिए, रहने ही नहीं चाहिए। यदि ज़रा से भी रहें तो समझो उसने ज्ञानी पुरुष के दर्शन किए ही नहीं। ज्ञानी पुरुष ऐसी मेहनत करवाने नहीं आए हैं कि 'तू तप कर या जप कर, या यह सब।' वह तो जिनकी प्रकृति में होता है, उसे यदि तप अनुकूल आए तो वह तप करे, जप करना हो तो जप करे लेकिन जब तक ज्ञानी पुरुष नहीं मिलते तभी तब तक वे सभी स्टेशन हैं। ज्ञानी पुरुष तो अंतिम, बॉम्बे सेन्ट्रल। उससे आगे गाड़ी वगैरह नहीं जाती, बंद है इसलिए आपके सभी काम हो जाते हैं। जो माँगो वह, आप जो भी कल्पना करो वह सब हो जाता है क्योंकि वे निरंतर निर्विकल्प समाधि में रहते हैं। अब, और क्या चाहिए? आप जो माँगो वह मिले, ऐसा है। फिर चिंता नहीं होगी, परेशानी नहीं होगी, दु:ख नहीं होगा, स्वतंत्र हो जाओगे। हमेशा के लिए इन्डिपेन्डेन्ट (स्वतंत्र), जबकि ये तो, डिपेन्डेन्ट टू ऑल (सभी पर आश्रित)।

सिर्फ, दर्शन से ही बदलाव

हमने, आपको यहाँ पर सिर्फ निर्लेप आत्मा ही नहीं दिया है, निर्विकल्प समाधि भी दी है। क्रमिक मार्ग में तो जब ठेठ सर्वांग शुद्ध आत्मा की स्थिति में पहुँचता है तब जाकर निर्विकल्प समाधि होती है।

जिसे देखते ही समाधि हो जाए, उस दर्शन को 'दर्शन' कहा जाता है, देखते ही समाधि हो जाए वे दर्शन सच्चे हैं। ये सब हमारे दर्शन किसलिए करते रहते हैं? ये दिखते हैं, वे ही सब को समाधि करवाते हैं, वह समाधि तो कैसी है? उसे आप निकालो, तब भी जाए नहीं! उस समाधि से कहें कि, 'हे समाधि, थोड़े दिन पीहर तो जाकर आ।' तो वह कहेगी, 'नहीं, इस ससुराल के बिना मुझे अच्छा नहीं लगेगा।' समाधि से कहें कि 'इस देह से ज़रा दखल करवानी है इसलिए तू जा न!' तो वह कहेगी कि, 'पहले कहना था न! अब वह नहीं हो सकेगा।' अब तो इस सहज समाधि को निकालें तो भी जाएगी नहीं, अब तो

'खाते हैं-पीते हैं, उठते हैं-बैठते हैं, उसे देखता है ज्ञानाकार।'

यदि अंतिम समय में अगर कोई ज्ञानी पुरुष मिल जाएँ और उनके दर्शन हो जाएँ तो देवगति बंध जाती है। सिर्फ, दर्शन से ही इतना बदलाव हो जाता है! ज्ञानी पुरुष के दर्शन से तो बहुत बदलाव हो जाता है, भीतर में विचार वगैरह सबकुछ बदल जाते हैं। विचार यदि अड़तालीस मिनट के ही लिए बदल जाएँ न, वह भी सिर्फ दर्शन से ही, तो हो गया काम!

हमसे क्या सीखना है?

हमसे क्या सीखना है? मैं अपने पास किसलिए बैठाए रखता हूँ? कि इनका जीवन देखो, इनकी आँखें देखो। आँखों में क्या रहता है? क्या सपोलिए हैं? नहीं! सपोलिए नहीं रहते। तो क्या रहता है? वीतरागता रहती है, वह सीखो। वाणी ऐसी होती है कि दिल को ठंडक हो जाए। अत: साथ में बैठने से यह सब हो जाता है। यह सब देख-देखकर सीखना है। मैं जो भी कुछ बोलता हूँ, वह सब देखकर सीखना है। एक बार देखा तो आपको मेरी तरह बोलना भी आ जाएगा। हम स्याद्वाद वाणी बोलते हैं यह पढ़ने से नहीं आती। तब लोग क्या कहते हैं? 'आप करके बताओ।' हम उसे एक बार कहेंगे कि 'देखो, टेबल पर बैठकर इस तरह से खाना खाना।' एक बार दिखाना पड़ता है। उसके बाद उसे दोबारा सिखाने नहीं जाना पड़ता और यदि किताबों में सिखलाया हो, किताबों में प्लानिंग की हो और वह सिखलाया जाए तो? कब सीख पाएगा? यदि जेब काटने वाले के साथ रखा हो तो छ: महीने में वह ऑल राइट बना देता है, एक्सपर्ट! वर्ना, बीस साल तक कॉलेज में जाने पर भी नहीं सीख पाएगा। जब उनके प्रोफेसर को ही नहीं आता तो!

वीतरागता के दर्शन

प्रश्नकर्ता : वीतराग कौन बन सकता है और वीतराग की कैसी दशा होती है, उसके वर्णन शास्त्र में पढ़े हैं लेकिन देहधारी वीतराग देखने को नहीं मिले हैं।

दादाश्री : नहीं मिलते। वीतरागों के तो दर्शन तक करने नहीं मिलते। इस काल में तो, मैं फेल हुआ इसलिए इन सभी को दर्शन करने को मिल गए। वर्ना ये जो केवलज्ञान के ज़रा सा भी नज़दीक पहुँचे हों, उनके दर्शन करने नहीं मिलते। यह तो, दर्शन करना मिले तो वीतरागता का वर्णन समझ सकते हैं कि वीतरागता कैसी होती है! और हम उस तरह से रहते हैं।

देखो न, किसी के साथ मतभेद या कोई झंझट है हमें? सामने वाला उल्टा बोले तब भी कोई झंझट है? उनके साथ किस तरह से 'डीलिंग' (व्यवहार) करनी है, वह मुझे आता है! वीतराग रहना और 'डीलिंग' करना, दोनों साथ में रहता है। डीलिंग *पुद्गल* करता है और हम वीतराग रहते हैं। अत: वीतरागता देखने को मिली इस काल में, यदि समझें तो! गहरे उतरें न, तो 'प्योर' वीतरागता देखने को मिलेगी और हम ज़रा सी भी *नोंध* (नोट करना) नहीं रखते। हो जाए, उसके बाद *नोंध* नहीं रखते। नोंधपोथी (नोट बुक) ही निकाल दी है।

प्रश्नकर्ता : कोई तारीफ करे, फूल चढ़ाए तो उसकी भी *नोंध* नहीं और पत्थर मारे उसकी भी *नोंध* नहीं?

दादाश्री : हाँ। वर्ना *नोंध*पोथियाँ इकट्ठी होते-होते पूरा उल्टा परिणाम आता है और उसके प्रति आपकी दृष्टि बदल जाती है। वह जब आपको देखेगा न, तो उसे आपकी दृष्टि बदली हुई लगेगी। क्या सामने वाले को पता नहीं चलेगा कि *नोंध*

हुई? लेकिन वे जब हमारी आँखों में वीतरागता देखते हैं तो तुरंत समझ जाते हैं कि 'दादा' वही हैं, जैसे थे वैसे के वैसे ही हैं! हमारी आँखों में वीतरागता दिखाई देती है। जैसे कोई खराब चारित्र वाला इन्सान उसकी आँखों से पहचाना जा सकता है, लोभी भी उसकी आँखों से पहचाना जा सकता है, उसी प्रकार से वीतराग भी उनकी आँखों से पहचाने जा सकते हैं। उनकी वीतरागता ही मुक्ति है! मुझे तो, आप सभी में अंदर 'मैं ही हूँ,' ऐसा लगता है! 'ज्ञानी पुरुष' के दर्शन करना आ जाए तो भी मुक्ति सुख बरतने लगे।

प्रश्नकर्ता : दर्शन करने यानी भाव से करना, वह?

दादाश्री : नहीं। भाव नहीं। भाव तो है ही आपको लेकिन दर्शन करना आना चाहिए। 'ज्ञानी पुरुष' के एक्ज़ेक्ट (यथार्थ) दर्शन करना आना चाहिए। जब अंतराय नहीं हों तो ऐसे दर्शन होते हैं और ऐसे दर्शन किए तभी से मुक्तिसुख बरतता रहता है!

बुद्धि दर्शन पर अंतराय डालती है

हम सभी को आपके जो दर्शन होते हैं न, आपका ज्ञान लिए हुए लोगों को दर्शन होते हैं और ज्ञान नहीं लिया हो, ऐसे जैनों को दर्शन होते हैं, वैष्णवों को दर्शन होते हैं तो ऐसे जैन जिन्होंने ज्ञान नहीं लिया है, उनसे ज़्यादा अच्छे दर्शन वैष्णवों को होते हैं। वैष्णव के बजाय उनसे निम्न क्वॉलिटी के धर्म वालों को और भी अच्छे होते हैं और जो एकदम गरीब हैं न, कल वे जो दो मज़दूर स्त्रियाँ आई थीं न, उन्हें आश्चर्यजनक दर्शन हुए। कैसा है? अद्‌भुत! जैसे प्रत्यक्ष भगवान मिल गए हों, उन्हें वैसे दर्शन हुए। उसका कारण यह है कि उनमें खुद की बुद्धि नहीं होती इसलिए उसका उपयोग ही नहीं होता न! बुद्धि आवरण नहीं डालती। उनके लिए तो वीतराग यानी वीतराग। आपने देखा था, उन दो महिलाओं को?

प्रश्नकर्ता : देखा था न, वे एकदम आनंदित हो गई थीं।

दादाश्री : हाँ, आनंदित लेकिन मुझे कहा भी। मैंने कहा, 'जब कभी अड़चन आए तो दादा का स्मरण करना, याद करना। 'कहने लगीं कि जीवनभर का मिल गया।' जीवनभर के दर्शन मिल गए। जब कभी अड़चन आए, तब दादा हाज़िर हो जाते हैं जबकि इन बुद्धिशालियों को नहीं होते, अंतराय आते हैं।

प्रश्नकर्ता : उनका इतना पुण्योदय है कि आप वहाँ गए और उन्हें दर्शन हो गए।

दादाश्री : जब हम कहीं बाहर जाते हैं न, तो हज़ारों लोग दर्शन करते हैं, फिर भी उन्हें उतने सुंदर दर्शन नहीं होते जैसे इन महिलाओं को हुए, लेकिन यों सामान्यभाव से तो दर्शन सभी को हो जाते हैं। वे महिलाएँ तो असामान्य दर्शन करके गई! आरती करके यहाँ से तुरंत ही बाहर निकला था न इसलिए असामान्य दर्शन मिल गए। वे आरती में दर्शन करके गई थी न, उस दर्शन से आवरण टूट गए इसलिए असामान्य दर्शन हो गए। उस समय किसी ने उनके चेहरे और उनका आचरण वगैरह देखा था?

प्रश्नकर्ता : हाँ, उन्हें एकदम अंदर से जो आनंद उत्पन्न हुआ था।

दादाश्री : हाँ, उनमें अंतराय वाली बुद्धि नहीं थी न! इन सब में तो अंतराय वाली बुद्धि है और जो ज़्यादा बुद्धिशाली होते हैं न, उन्हें तो बिल्कुल भी अच्छे दर्शन नहीं होते। हमारे दर्शन तो एक ही जैसे होते हैं लेकिन उन्हें समझ में नहीं आता क्योंकि उनकी बुद्धि दखल डालती है।

दिल साफ होना चाहिए

जिसकी बुद्धि परेशान करती है न, उसे दादा के दर्शन भी ठीक से नहीं होते। वर्ना, दादा के दर्शन तो प्रत्यक्ष वीतराग दर्शन हैं, यदि समझ में आए तो।

प्रश्नकर्ता : प्रत्यक्ष वीतराग दर्शन!

दादाश्री : जैसे कि किसी की आँखें देखकर नहीं कहते हैं कि इस आदमी की नज़र ठीक नहीं है, इसकी दृष्टि कुछ खराब है। इसी तरह से यह सब भी पता चल जाता है कि यह कौन सी दृष्टि है। वीतराग दृष्टि का भी पता चल जाता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा। वीतराग दृष्टि का भी पता चल जाता है। वे भाई कह रहे थे कि अलौकिक दर्शन हुए।

दादाश्री : हाँ, अलौकिक। और वह समझ में आने पर ही वह दिखाई देता है इसलिए फिर वे मुझसे कहने लगे कि 'मैं यहाँ पर बैठूँगा।' मैं जहाँ जाता हूँ न, वहाँ वे ऐसे दर्शन करते हैं, अलौकिक! मैं समझ जाता हूँ कि इस पद में पहचानना तो बहुत मुश्किल है, कोट-टोपी में। यहाँ पर तो वे यदि दृष्टि डालने जाएँगे तब भी नहीं डाल पाएँगे! यदि भगवा कपड़े पहने होते, तब तो दर्शन होते। उन्हें कोट-टोपी में यथार्थ दर्शन हो गए, कल्याण ही हो गया न! यह टेस्टेड कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : मूल चीज़ के दर्शन किए।

दादाश्री : अलौकिक चीज़ के, जिनके कभी भी दर्शन नहीं होते, वैसे दर्शन किए! लेकिन उसके लिए साफ (क्लीन) हार्ट होना चाहिए, उस दर्शन के लिए। तो रास्ते में भी हमारे दर्शन कर पाएगा।

प्रश्नकर्ता : वह साफ (क्लीन) हार्ट अर्थात् उसका अंत:करण शुक्ल होता है, क्या दादा?

दादाश्री : साफ, प्योरिटी। इम्प्योर तो होता है लेकिन अन्य सभी की इम्प्योरिटी जितना इम्प्योर नहीं होता। वह देख सकता है, दादा के दर्शन कर सकता है। उसे हंड्रेड परसेन्ट दर्शन होते हैं, फिर ज्ञानी हो या अज्ञानी, उसकी तैयारी होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : उसकी खुद की तैयारी होनी चाहिए। उसका अंत:करण शुक्ल होना चाहिए।

दादाश्री : महात्माओं को तो जब दर्शन होते हैं तो उसके बाद वे ज़ोर-ज़ोर से 'असीम जय जयकार' बोलते रहते हैं, तन्मयाकार होकर क्योंकि उनकी बुद्धि अंतराय नहीं डालती। जो बुद्धि दखल करती है न, वह बुद्धि यथार्थ दर्शन नहीं होने देती। ज्ञानी को पहचानने के बाद तो, वह घर पर भी न जाए, सोने के लिए। कहेगा, 'मैं चबूतरे पर ही पड़ा रहूँगा। आपके वातावरण में ही, यहीं पड़ा रहूँगा लेकिन मुझे अपनी छत्रछाया में ले लीजिए।' ऐसी पहचान होना मुश्किल है न! ऐसी वीतरागता को देख पाना मुश्किल है! देखना आना चाहिए न?

हार्टिली को होते हैं उच्च प्रकार के दर्शन

प्रश्नकर्ता : दादा, कई बार आपके दर्शन से इतना अधिक आनंद होता है कि रोना आ जाता है। उसका क्या कारण है?

दादाश्री : वे हर्षाश्रु हैं। दर्शन करने से हर्ष के आँसू आते हैं। लेकिन जब तक बुद्धि उछल-कूद करती रहे, तब तक नाप नहीं पाते।

देखो न, बुद्धि उछल-कूद करती है तो यहाँ पर विनय भी नहीं रहता। हार्टिली को उच्च प्रकार के दर्शन होते हैं। बुद्धि के शांत हो जाने के बाद ऐसे दर्शन होते हैं। हृदयगामी हो जाने पर होते हैं। जब तक बुद्धि शांत नहीं हो जाती, स्थिर नहीं हो जाती, तब तक धर्म प्राप्त नहीं कर

सकता। जब बुद्धि स्थिर हो जाती है, तब दादा के यथार्थ दर्शन होते हैं। तब हृदयगामी दर्शन होते हैं, हार्टिली दर्शन होते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो फिर हृदय तक पहुँचने के लिए सत्संग और दर्शन की ज़रूरत है न?

दादाश्री : हाँ, दर्शन और सत्संग की ज़रूरत है। आँखों से देखना एक प्रकार का दर्शन है, बुद्धि से जो दर्शन होता है वह दूसरे प्रकार का दर्शन और तीसरा है आत्मा का दर्शन, जब तीनों प्रकार से दर्शन होते हैं, तब काम होता है। दर्शन तो बहुत काम बना देते हैं। यदि अच्छी तरह से दर्शन कर लेंगे न तो बहुत काम बना लोगे। सत्संग में तो वापस बुद्धि को हक़ मिल जाता है लेकिन दर्शन में तो बुद्धि को हक़ नहीं मिलता।

प्रश्नकर्ता : बुद्धि की विशुद्धि की ज़रूरत है या बुद्धि की ज़रूरत ही नहीं है?

दादाश्री : विशुद्धि के लिए क्या इलाज करोगे? वह तो, ज्ञानी पुरुष के पास जाएँ और अगर वे सच्चे ज्ञानी हों तो बुद्धि सम्यक् हो जाएगी। यह जो विपरीत है न, वह जब सम्यक् होती है तो उसे शुद्ध होना कहते हैं। वर्ना, सम्यक् नहीं होती, विपरीत ही रहती है।

नहीं है आसान, प्रत्यक्ष की पहचान

ज्ञानी मिलते नहीं हैं और यदि मिल जाएँ तो अपना कल्याण हो जाता है! बाकी, ज्ञानी के दर्शन नहीं मिलते। यदि कोई कच्चा है और उसे दर्शन हो भी जाएँ, तो वह पहचान नहीं पाएगा। पहचानना आसान नहीं है न? यदि पहचानना आसान होता तो जौहरी की ज़रूरत ही नहीं पड़ती न! यदि खुद ही हीरे को पहचान पाता तो ले ही आता न! पहचानने की शक्ति नहीं है न!)

अरबों रुपए देने पर भी ज्ञानी पुरुष के दर्शन नहीं मिलते, वैसे ज्ञानी पुरुष सामने से आकर दर्शन देते हैं तब भी लोगों को समझ में नहीं आता। फिर क्या हो सकता है? ऐसा भी इसलिए है न कि बहुत भारी अंतराय है!

प्रश्नकर्ता : दादा, किसी भी समय में ज्ञानी पुरुषों को उनके समय के बहुत कम लोग ही पहचान सके हैं।

दादाश्री : लेकिन, पहचान नहीं सकते न...

प्रश्नकर्ता : सभी के, अर्थात् वे मुहम्मद साहब हों या ईसा मसीह या महावीर भगवान या बुद्ध... उनके जाने के बाद ही यह सब हुआ है।

दादाश्री : नहीं, लेकिन मुझे ऐसे चालीस-पचास हज़ार लोग मिले हैं न, जो मुझे पहचान गए, वह भी इसलिए क्योंकि यह नकद है। वर्ना कोई नहीं आता। यह तो नकद है न!

प्रश्नकर्ता : फिर पचास साल के बाद पता चलता है कि, 'ओहोहो! ऐसे ज्ञानी पुरुष प्रकट हुए थे।'

दादाश्री : हाँ.. हाँ। बाद में जब पुस्तकें पढ़ेंगे न, तब पता चलेगा।

उसके लिए परखने की शक्ति चाहिए

किसी भी जन्म में ज्ञानी के दर्शन नहीं हुए या ज्ञानी को पहचाना ही नहीं। जो पहचान जाएगा वह कोई कमी नहीं रखेगा। पहचान हो जानी चाहिए कि ये ज्ञानी वीसा हैं या दशा, अढ़िया है या पाँचिया? यों वीसा या दशा (संप्रदाय) पहचान जाते हैं लेकिन ज्ञानी को नहीं पहचान पाते। यदि पहचान नहीं पाएँगे तो लाभ नहीं होगा। वह पहचान सकना चाहिए कि ये कौन हैं! पहचान जाएँ न, पच्चीस अरब के हीरे को पहचान जाएँगे तो पच्चीस अरब का फायदा होगा हमें, लेकिन

यदि पच्चीस अरब के हीरे को हम दो सौ, पाँच सौ या हज़ार का मानेंगे तो नुकसान होगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, आपके दर्शन हुए और देखते ही तुरंत मान लिया कि ये सच्चे पुरुष हैं।

दादाश्री : दर्शन से ही पहचान लिया?

प्रश्नकर्ता : हाँ, पहचान लिया।

दादाश्री : यदि सच्चे हृदय वाला हो न, तो दर्शन से ही पहचान जाता है। यों देखते ही पहचान जाता है। ऐसा हो सकता है कि ज्ञानी पुरुष को पहचान न पाएँ? लुच्चे और चोरों को पहचान लेते हैं, बदमाशों को भी पहचान लेते हैं! यह जेब काट सकता है, यदि ऐसा सब पहचान सकता है तो क्या ज्ञानी को नहीं पहचान पाएँगे?

प्रश्नकर्ता : मेरे चाचा का भी ऐसा ही था। उन्होंने मुझे टेलीफोन करके बताया कि, 'मैं बहुतों के संपर्क में आया हूँ, मैं कईंयो से मिला हूँ लेकिन इन पुरुष में मुझे कुछ अद्‌भुत चीज़ दिखाई देती है। आप आकर दर्शन करो।' इसलिए मैं उस दिन आपके दर्शन करने आ गया था।

दादाश्री : क्या उन्होंने ऐसा कहा कि अद्‌भुत दिखाई देता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, उस वक्त कहा था।

दादाश्री : उनमें परखने की ज़बरदस्त शक्ति है, अलग प्रकार के हैं। बाकी, धार्मिक वर्ग भी हमें पहचान नहीं पाता। उनके मन में ऐसा भान रहता है कि 'मैं कुछ जानता हूँ', उसकी परत होती है इसलिए इन्हें पहचान नहीं पाते। सिर्फ, मज़दूर पहचान सकते हैं या फिर साफ हृदय वाले लोग पहचान सकते हैं। कल वे नहीं आए थे?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : वे क्या कह रहे थे? कि आपके दर्शन से ही मेरा सर्वस्व (कल्याण) हो गया! इस तरह से तो शायद ही कोई पहचान सकता है, वर्ना नहीं पहचान सकते। मज़दूर पहचान जाते हैं क्योंकि उनमें लोभ नहीं है, ऐसी झंझट नहीं है कि 'मैं जानता हूँ।'

प्रश्नकर्ता : वे दादा को पहचान जाते हैं, वही चमत्कार है न?

दादाश्री : नहीं, हमें इसे चमत्कार नहीं कहलवाना है। चमत्कार तो, ज्ञानविधि में, एक ही घंटे में लोगों की पूरी दृष्टि बदल जाती है, क्षायक समकित हो जाता है। उस जैसा ग़ज़ब का चमत्कार, किसी काल में नहीं हुआ, ऐसा होता है लेकिन उसे चमत्कार नहीं कहना है। यदि इसे चमत्कार कहेंगे न तो उसका डिवैल्युएशन (अवमूल्यन) हो जाएगा। चमत्कार क्या है? जिसकी कोई वैल्यू (कीमत) नहीं है उसे चमत्कार कहते हैं। यह तो अमूल्य चीज़ है। अगर इसे चमत्कार कहेंगे तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : फिर भी यह चीज़ प्रेशियस (कीमती) कहलाती है न?

दादाश्री : हाँ।

ज्ञानी को किस दृष्टि से देखें?

प्रश्नकर्ता : दादा, ज्ञानी पुरुष के दर्शन किस तरह से करने चाहिए?

दादाश्री : ज्ञानी पुरुष को तो... 'आप कौन हैं, वह आप जान गए न, कि 'यह' मैं नहीं हूँ!'

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : और यदि आप मुझे यह मानोगे तो यह आपकी भूल है न?

प्रश्नकर्ता : भूल है।

दादाश्री : आप, अपने आपको 'यह' नहीं मानते और यदि मेरे लिए 'ऐसा' मानोगे तो उसमें आपकी ही भूल है न? दादा, अभी भी मीठा क्यों खाते हैं? यहाँ पर आपने ऐसा देखा तो इसका मतलब आप मुझे पहचानते ही नहीं न? ऐसा ही कहेंगे न कि मुझे नहीं पहचाना?

प्रश्नकर्ता : पहचाना ही नहीं न, दादा।

दादाश्री : आप, अपने आपको पहचानने लगे लेकिन मुझे नहीं पहचानते।

प्रश्नकर्ता : दादा, वैसी पहचान होना बहुत मुश्किल है।

दादाश्री : अरे! कुछ मुश्किल है क्या इस दुनिया में? कुछ भी मुश्किल है क्या? मुश्किल तो, बी.ई.इन्जीनियर बनना बहुत मुश्किल है। सिर फट जाए, उतना दिमाग़ में भरना पड़ता है। इसमें कैसी मुश्किल? यह तो खिचड़ी बनाने से भी आसान है!

प्रश्नकर्ता : लेकिन उन्हें पहचानेंगे कैसे?

दादाश्री : लोगों में परखने की शक्ति ही नहीं है न! वे तो लेश्या से पहचाने जा सकते हैं।

ज्ञानी पुरुष की लेश्या के दर्शन

प्रश्नकर्ता : क्या ज्ञानी पुरुष की लेश्या से आकर्षण उत्पन्न होता है?

दादाश्री : लेश्या से ही उसे उजाला दिखाई देता है और वह बेचारा दर्शन करता है। उसे खुद को दिखाई देता है। वह लेश्या देखता है। लेश्या उत्पन्न हो, तभी दर्शन करता है। वर्ना कोई दर्शन ही न करे। वह लेश्या देखता है, यों टकटकी लगाकर दखता है, तब उसे पता चलता है कि यह लेश्या दिखाई दी। लेश्या को पहचानना बहुत कठिन चीज़ है लेकिन ज्ञानी पुरुष की लेश्या को लोग पहचान पाते हैं। वह एक सरीखी रहती है इसलिए पहचान जाते हैं और वहाँ उसे यथार्थ दर्शन होते हैं।

इस काल में शुक्ल लेश्या नहीं होती लेकिन यह तो 'अक्रम' है, इसलिए है। जब हम आरती करते हैं उस समय हमारी शुक्ल लेश्या रहती है। किसी-किसी टाइम पर रहती है। हमारी गुरुपूर्णिमा मनाते हैं न, तब पूरे दिन शुक्ल लेश्या रहती है।

छोटे बच्चे से लेकर ठेठ बूढ़े तक सभी को दर्शन होते हैं पर यदि उस स्थिरता को पकड़कर, खुद भीतर स्थिर रहे न, तब लेश्या को पहचान सकता है। यदि खुद स्थिर नहीं हो तो लेश्या को नहीं पहचान सकता। यदि खुद के भीतर बाल चक्र हिलता रहे तो नहीं पहचान पाते। स्थिर रहने पर लेश्या को पहचान सकता है। ज्ञानी पुरुष की ऐसी पद्म लेश्या रहा करती है और दर्शन मात्र से ही मन में तृप्ति हो जाती है, संतोष हो जाता है। कुछ देना-लेना नहीं पड़ता। स्थिर रहे तो पहचान सकता है।

यथार्थ दर्शन किसे कहेंगे?

प्रश्नकर्ता : तो दादा यथार्थ दर्शन किसे कहेंगे? क्या देखने मात्र से दर्शन नहीं होते?

दादाश्री : दर्शन तो सभी कर रहे थे न, लोग ऐसे दर्शन कर रहे थे न।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लोग आकर पैर छूकर जा रहे थे।

दादाश्री : हाँ, वह भी प्रेम से। किसी के कहने से करें तो वे दर्शन थोड़े ही कहे जाएँगे! मेरी आँखों में खुद की आँखों मिलाकर दर्शन कर लेते हैं.. कईं तो बस यों ही छोड़ देते हैं उसके भाव के अनुसार। इस तरह सिर्फ देखने को ही दर्शन नहीं कहते, भीतर उत्साह आना चाहिए।

हमारे दर्शन यानी, यों ही हमें देखो, वे दर्शन नहीं कहलाते। हमारे दर्शन अर्थात् हमारी यथार्थ कीमत समझना। यों तो एक अरब का हीरा हो लेकिन जब तक उसकी कीमत नहीं समझें तो उसका क्या फायदा? वह तो काँच और हीरे में अंतर नहीं समझ पाएगा न?

अमरीका में, दादा के दर्शन करने के लिए, एक व्यक्ति सत्रह हज़ार रुपए खर्च करके आया था, बीवी और बेटे को लेकर। सत्रह हज़ार अर्थात् सत्रह सौ डॉलर होते हैं, यहाँ पर आने-जाने का किराया, तीन टिकिटों का। वह तो सिर्फ दर्शन के लिए। अपने यहाँ तो लोग यदि सौ रुपए खर्च करने पड़ें तो कहते हैं कि, 'टाइम नहीं है।' उनका (मोह रूपी) नशा नहीं उतरा है न! वे जानते नहीं हैं कि यह क्या मिल रहा है! वे जानते ही नहीं हैं कि अमूल्य अर्थात् अरबों रुपए से भी ज़्यादा कीमती है यह! उसे भान ही नहीं है न।

यदि एक ही दिन मेरे यथार्थ दर्शन कर ले तो उसका कल्याण हो जाएगा। सिर्फ चेहरा नहीं देखना है लेकिन लोगों को यथार्थ दर्शन करना भी नहीं आता न!

ये सभी तो देह को नमस्कार करते हैं। उससे उन्हें देह अच्छी मिलेगी। अंदर बैठे हुए भगवान के दर्शन तो कोई करता ही नहीं है। देह को नमस्कार नहीं करना है। अदंर बैठे हुए भगवान को नमस्कार करना है। वही यथार्थ नमस्कार है।

यथार्थ दर्शन से बंधा तीर्थंकर गोत्र

श्रेणिक राजा को महावीर भगवान के सिर्फ दर्शन करने से ही तीर्थंकर गोत्र बंध गया था और ऐसे भी जीव हैं जो उन्हीं भगवान महावीर के पास आकर अनंत अवतारी बने क्योंकि भगवान के दर्शन करते समय मशीन उल्टी घूमी तो उससे अनंत अवतार हो गए!

वे श्रेणिक राजा, अगली चौबीसी के पद्मनाभ नामक पहले तीर्थंकर बनेंगे! भगवान के दर्शन मात्र से ही! अब उस घड़ी दर्शन तो बहुत सारे लोगों ने किए थे न! लेकिन नहीं, श्रेणिक राजा को पहले किसी गुरु महाराज ने जो दृष्टि दी थी न, वह दृष्टि और यह दर्शन, दोनों एक साथ हुए तो तुरंत ही तीर्थंकर गोत्र बंध गया!

पत्थर पर एकाग्रता करने से मूर्ति तक चलने लगती है तो यदि इन ज्ञानी पुरुष पर एकाग्रता करें, तो उसे तीर्थंकर के दर्शन होंगे।

ये दर्शन दुनिया में दुर्लभ से भी दुर्लभ है, ये दादा तो खुद तीर्थंकरों के असिस्टेन्ट (सहायक) हैं।

ज्ञानी पुरुष के दर्शन होना ही बहुत कीमती चीज़ है। बहुत बड़ी कीमत चुकाने पर दर्शन होते हैं।

जौहरी ही समझे हीरे की कीमत

लोग तो मुझे गाड़ी में भी मिलते हैं न, नहीं मिलते? ऐसे मिलने को दर्शन नहीं कहते। यहाँ आपसे जो मिलना हुआ, वास्तव में वह दर्शन कहलाता है लेकिन वह भी पूरी कीमत का नहीं। आपको इस हीरे की जितनी कीमत समझ में आई उतने ही आपको दर्शन हुए। आपको जितनी कीमत समझ में आई उतने दर्शन हुए। जितना इन्हें समझ में आया उतने इन्हें दर्शन हुए। जितनी कीमत समझ में आए, उतने दर्शन।

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : जब हम आपके घर आए थे उस दिन तो आपको ऐसा ही लगा कि ये कोई ज्ञानी पुरुष हैं इसलिए हमारे आने पर आप विनय धर्म में रहे लेकिन आज जैसे दर्शन हुए, उस दिन भी क्या वैसे ही दर्शन हुए थे?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : हाँ। तो आज वापस आपका दर्शन बढ़ गया क्योंकि ये दर्शन इस तरह से हों तो सही है। दर्शन कब समझ में आते हैं, जब वे हमें कुछ दे देते हैं। इसे यथार्थ दर्शन क्यों समझ में आ गया? वे मेरे पीछे क्यों पड़े हैं? क्या व्यापार व पैसा नहीं था? तब वे कहते हैं, व्यापार व पैसा तो बहुत था। मुझसे कहने लगे, 'दादा, काम-काज का क्या करूँ?' मैंने कहा, 'काम-काज अपने आप जितना चलता है, उतना चलने दो। अब, उठापटक मत करना।' वर्ना फिर काम-काज, रोज़गार तो बहुत था, तो फिर दादा के पीछे क्यों पड़े हो? ऐसे हाथ धोकर पीछे पड़े हैं कि, एक क्षण के लिए भी नहीं चूकते। इस तरह से कि भूलते ही नहीं! वहाँ गाड़ी में भी पूरे दिन टेपरिकॉर्डर बजता रहता है। गाड़ी में भी टेपरिकॉर्डर बजता है। किसलिए पीछे पड़े हैं? क्योंकि उन्हें दर्शन हो चुके हैं। क्या हो गया? उन्होंने पूरी तरह से कीमत आंक ली। अब, कीमत पूरी तरह से आंक ली, वह भी उनकी भाषा में है। हर एक अलग-अलग कीमत आंकता है, थोड़ा अंतर होता है। अगर किसी हीरे की कीमत मुंबई के बाज़ार में पच्चीस लाख रुपए मानते हों तो उसे यदि मद्रास में बेचने जाएँ तो सैंतालीस लाख रुपए मिलेंगे। आपको समझ में आता है? और यदि उसी हीरे को पेरिस में बेचने जाएँ तो सवा करोड़ रुपए मिलेंगे! तो किसके लिए ज़्यादा कीमत है? पेरिस वाले के लिए ज़्यादा है। क्योंकि वे पहले से ही, काफी समय से जवाहरात के बारे में स्टडी करते आए हैं इसलिए वे एक्सपर्ट हो गए हैं और फिर बाज़ार भी होना चाहिए न? यदि एक्सपर्ट हों और बाज़ार न हो, तब भी कीमत समझ में नहीं आएगी। आपको समझ में आया न? यानी आपको कीमत इस तरह समझ में आनी चाहिए। जब आपके घर आए थे, तब जो कीमत आंकी थी, वह तो और कुछ नहीं लेकिन आप पुण्यशाली लोग इसलिए कुछ आड़ा-टेढ़ा नहीं, सबकुछ विनयी था लेकिन वास्तविक दर्शन नहीं था इसलिए वास्तविक पहचान नहीं हुई। आज थोड़ी बहुत पहचान हुई, ऐसा लगा कि ये दर्शन योग्य है।

इसलिए तो कवि ने गाया है न कि,

'जेनी रे संतो, कोटि जन्मोनी पुण्यै जागे,
तेने रे संतो, दादानां दर्शन थाये रे,
घटमां एने खटकारो खट खट वागे रे।'

– नवनीत

'जब करोड़ो जन्मों के पुण्य एकट्ठे होते हैं तब जाकर ये दर्शन होते हैं।' फिर दूसरे वाक्य में क्या करते हैं कि, 'उसे फिर खट-खट होता रहता है।' खट-खट यानी याद ही आते रहते हैं। हम लक्ष्मी जी को याद करने जाएँ तो उससे पहले तो ये याद आ जाते हैं। जहाँ जाओ वहाँ आगे ही आगे। फिर तो अपना कल्याण ही हो गया न! हमें याद करने हों फिर भी महावीर, भगवान याद नहीं आते, भूल जाते हैं। अगर वे महावीर भगवान याद ही आते रहें तो अपने जैसे पुण्यशाली कौन? याद ही आते रहें।

खटकारो यानी क्या कि एक बार 'दादा' से मिला तो यहाँ पर बार-बार दर्शन करने का मन होता रहता है इसलिए हम कहते हैं कि, 'यदि तुझे वापस जाना हो तो मुझसे मिलना मत और मिलना हो तो फिर तुझे मोक्ष में जाना पड़ेगा! यदि तुझे चार गति में जाना हो तो वह भी दूँ। यहाँ तो मोक्ष का सिक्का लग जाता है इसलिए मोक्ष में जाना ही पड़ता है।' हम तो आपसे कहते हैं कि यहाँ पर फँसना नहीं और फँसने के बाद निकल नहीं सकोगे।

स्वप्न में भी ज्ञानी के दर्शन क्रियाकारी

प्रश्नकर्ता : दादा, आज से चारेक महीने पहले आप मेरे स्वप्न में आए थे और अभी आपके दर्शन का लाभ मिल रहा है। जैसे स्वप्न में थे, वही आप हो।

दादाश्री : इसमें भूलचूक न हो जाए देख ना ज़रा! एक्ज़ेक्ट वे ही हैं?!

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : आपका काम हो गया। जिसे स्वप्न में दर्शन हो गए, उसके जैसा पुण्यशाली कौन? वैसे तो बहुत से लोगों को होते हैं। दस-बीस हज़ार लोगों को हुए हैं दर्शन लेकिन आपको जो हुए, वे बहुत अच्छे हुए। इस तरह पहले से ही होता है लेकिन कुछ ही लोगों को! एक्ज़ेक्ट इसी तरह दिखाई दिया था? तब आपसे कुछ कहा था?

प्रश्नकर्ता : बस यही। ऐसे दर्शन हुए और सुबह एकदम से मेरी आँख खुल गई।

दादाश्री : बहुत अच्छा हो गया, आपका पुण्य जागा! वर्ना, लोग तो आशा रखते हैं। चाहे कितनी ही मन्नतें माने, चाहे कितना ही खर्च करें, फिर भी उन्हें दर्शन नहीं मिलते!

प्रश्नकर्ता : ऐसा नहीं, आपके बारे में किसी प्रकार का विचार भी नहीं, कोई खयाल भी नहीं।

दादाश्री : खयाल नहीं था उसके बावजूद भी दर्शन हो गए, वही सब से बड़ा आश्चर्य है न! लोग तो आपको बड़ा पुण्यशाली मानेंगे।

प्रश्नकर्ता : हमें जो स्वप्न आते हैं और उनमें हम ज्ञानी पुरुष के दर्शन करते हैं तो वे सभी स्वप्न सच हैं क्या?

दादाश्री : हाँ। स्वप्न वाली अवस्था गलत नहीं है, वह अवस्था सच है। फिर चाहे हमें अनुकूल आए या नहीं, वह अलग बात है। ये दादा तो बहुत लोगों को स्वप्न में आते हैं, वह गलत नहीं है। स्वप्न में आकर विधि भी कर देते हैं।

प्रश्नकर्ता : जब आप अहमदाबाद आने वाले होते हैं तो उसके पाँच-छः दिन पहले स्वप्न में आ जाते हैं।

दादाश्री : स्वप्न दशा में दर्शन बिल्कुल सच बात है। वह कोई गप्प नहीं है। दुनिया में गप्प कुछ है ही नहीं। फैक्ट चीज़ ही होती है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अहमदाबाद में आपके दर्शन होते हैं, फिर वापस स्वप्न में होते हैं तो, वह भी वास्तविकता ही कहलाएगी न?

दादाश्री : हाँ। वास्तविकता। एक्ज़ेक्टनेस। वह फल भी देता है। भीतर आनंद ही आनंद हो जाता है। वहाँ उस समय इतना आनंद हो जाता है।

स्वप्न में दर्शन से पाते हैं, विश्राम

प्रश्नकर्ता : जागृत दशा में आपके दर्शन से जो संस्कार पड़ते हैं और स्वप्न अवस्था में हुए आपके दर्शन से जो संस्कार पड़ते हैं, उन दोनों में से ज़्यादा असरदार संस्कार कौन से हैं?

दादाश्री : वे तो जागृत दशा वाले हैं और स्वप्न दशा वाले जो संस्कार हैं, वे स्थिर करते हैं। जागृत दशा वाले दर्शन हेल्प करते हैं। स्वप्न अवस्था वाले स्थिर करते हैं, चंचलता कम कर देते हैं। स्वप्न में ज्ञानी के दर्शन होने से तो मन मज़बूत हो जाता है और अन्य कहीं नहीं जाता।

एक आदमी ने मुझसे कहा, 'दादा, सपने में मैं दो घंटे तक रोया। आप आए और आपके दर्शन करने से सब शांत हो गया! हलका फूल

जैसा हो गया! मैंने कहा, 'क्या कपड़े भीग गए थे?' आमने-सामने मिलने के बजाय, दादा ऐसे सपने में आएँ और उनसे माँगे तो बेहिसाब मिलता है। ये दादा सपने में आकर भी सबकुछ कर सकते हैं! माँगना आना चाहिए। हमारे कुछ महात्माओं को तो दादा रोज़ सपने में आते हैं। शास्त्र क्या कहते हैं,

'एनुं स्वप्ने जो दर्शन पामे रे,
तेनुं मन न चढे बीजे भामे रे।'

यदि ज्ञानी पुरुष के स्वप्न में भी एक बार दर्शन हो जाएँ तो तेरे मन की दूसरी भ्रमणाएँ छूट जाएँगी।

ये चितवृत्तियाँ तो थक-थककर परेशान हो गई, निढाल हो गई हैं। जब दादा के स्वप्न में दर्शन होते हैं तब वे विश्राम पाती हैं। यह आनंद का स्थान है। आनंद भीतर से आता है लेकिन जब परमानंदी पुरुष का संयोग मिलता है तब आनंद छलकता है।

दादा दिखाई देते हैं

प्रश्नकर्ता : आज ही आपके प्रत्यक्ष दर्शन किए। बीमारी में आपका साहित्य पढ़ा था, तब आपकी आँख और मस्तक के दर्शन हुए, वह क्या है?

दादाश्री : दादा के दर्शन तो राह चलते हुए भी हो जाते हैं। वे तो बात भी करते हैं आपसे। आपका भाव हो तो वे आपसे बातें भी करते हैं। आपसे बातें करते हैं, आपको सुनाई देता है। सबकुछ करते हैं।

प्रश्नकर्ता : इन्होंने तो आपको पहले कभी नहीं देखा था।

दादाश्री : हाँ, फिर भी उन्हें दिखाई देते हैं। कईं लोगों ने नहीं देखा हो फिर भी उन्हें दादा दिखाई देते हैं। वहाँ दर्शन होने के बाद वे मुझसे आकर कहते हैं कि मुझे आप दिखाई दिए थे, मैंने जिनके दर्शन किए थे, आप वही हैं।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कैसे हो सकता है?

दादाश्री : वही इस काल का सब से बड़ा आश्चर्य है न, कि सूक्ष्म शरीर से जो बाहर घूमते हैं, वे ही हर कहीं दर्शन देते हैं। बाहर अमरीका-मुंबई, सभी जगह घूमते हैं। रात-दिन चौबीस घंटे, सभी जगह घूमते रहते हैं। मैं तो यहीं पर होता हूँ लेकिन वहाँ दादा दिखाई देते हैं। आपसे बातचीत भी करते हैं। अलगे दिन आकर आप मुझसे पूछते भी हो कि 'साढ़े तीन बजे आप आए थे?' तो मुझे 'हाँ' कहना पड़ता है। आपको उलझन न हो इसलिए 'हाँ' कहना पड़ता है। जिस तरह मैं बोलता हूँ, उसी तरह बोलते हैं। तब वैसा ही लगता है, वह लिख भी लेता है। वापस मुझे छोड़ने आते हैं। और फिर कहते हैं कि 'मैं आपको छोड़ने आया था' वहाँ पर, कार के पास। ऐसे कुर्सी पकड़ी थी।

प्रश्नकर्ता : आप यहाँ पर होते हैं और बाहर कहीं और किसी को आपके दर्शन होते हैं, तो उस समय आप क्या अनुभव करते हैं?

दादाश्री : वह तो ऐसा है न, हमारे दर्शन होना, वह तो अलग चीज़ है और मुझे कब अनुभव होता है? कि जब उसका लेवल सेट हो चुका हो, तब मुझे पता चलता है कि इस आदमी ने फोन पकड़ लिया है। वर्ना मुझे कुछ पता नहीं चलता।।

प्रश्नकर्ता : वह लेवल कौन निश्चित करता है? लेवल किस तरह से निश्चित होता है?

दादाश्री : आपमें उतनी केपैसिटी आ जानी चाहिए। यदि केपैसिटी आ जाए न, तो लेवल सेट

हो जाएगा। उसके बाद बातचीत होती है, एक-एक शब्द सुनाई देता है। आप इंग्लैंड में हों, तब भी सुनाई देता है। यह तो पूरा विज्ञान है!

एक बार दर्शन करने के बाद प्रत्यक्ष ही रहते हैं

जिसने इस देह में दादा को देखा हो, जिसने दादा के दर्शन किए हों, उसके लिए फिर वे हमेशा प्रत्यक्ष ही रहते हैं। फोटो तो हम यों साधारण तौर पर रखते हैं। यदि फोटो न हो तब भी चलेगा। अब रोज़ ऐसे बातचीत करना।

प्रश्नकर्ता : जब आप यहाँ होते हैं, तब आपकी जो भक्ति करते हैं, वह प्रत्यक्ष भक्ति कहलाती है लेकिन जब आप परदेस में हों, तब हम आपके दर्शन करते हैं, तो क्या वह भी प्रत्यक्ष कहलाती है?

दादाश्री : जब परदेस में रहते हैं तब अलग ही बात है। तब फोटो में दर्शन करना। यानी एक बार प्रत्यक्ष हो जाए, फिर प्रत्यक्ष ही दिखाई देंगे। जहाँ देखो वहाँ दिखाई देंगे, रास्ते में भी दिखाई देंगे।

फोटो में भी दादा के एक्ज़ेक्ट दर्शन

प्रश्नकर्ता : दादा, जब मन में बहुत ऐसा हो जाता है तब दादा के फोटो के पास जाकर...

दादाश्री : वहाँ बातें करते हो?

प्रश्नकर्ता : हाँ। बातें करता हूँ। वह जो आपका खड़ा फोटो हैं न, वहाँ दादा के पैर के पास जाकर रोज़ रात को सोने से पहले विधि करता हूँ।

दादाश्री : वह तो एक्ज़ेक्ट स्थिति है, आपको ऐसा नहीं मानना चाहिए कि दादा में और इसमें अंतर है इसलिए इन्होंने खड़े रहकर फोटो खिचवायाँ है न।

अरे! हमारे तो क्या लेकिन अगर बाद में हमारे फोटो के 'दर्शन' करेगा, तो भी वह पार उतर जाएगा।

ज्ञानी का निदिध्यासन बनाता है, निरालंब

प्रश्नकर्ता : दादा, आपका यह जो निदिध्यासन होता है, आपके दर्शन होते हैं, वह क्या है? क्या वह मूल चैतन्य है?

दादाश्री : हमारी डायरेक्ट शक्ति प्राप्त हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : क्या वह असली चैतन्य है?

दादाश्री : उनका निदिध्यासन करने से भीतर चैतन्य शक्ति उत्पन्न हो जाती है। भीतर इस निदिध्यासन में चैतन्य साथ में होता है इसलिए आपके भीतर ज़बरदस्त शक्ति बढ़ जाती है।

जिसे दादा का निदिध्यासन रहता है, उसके तो सभी ताले खुल जाते हैं। दादा के साथ अभेदता, वही निदिध्यासन है! बहुत पुण्य हो, तब ऐसा उदय आता है और 'ज्ञानी' के निदिध्यासन का साक्षात् फल मिलता है। वह निदिध्यासन, खुद की शक्ति को भी वैसी ही बना देता है, उसी रूप बना देता है क्योंकि 'ज्ञानी' का स्वरूप अचिंत्य चिंतामणी है इसलिए उसी रूप बना देता है। 'ज्ञानी' का निदिध्यासन निरालंब बनाता है। फिर 'आज सत्संग नहीं हुआ, आज दर्शन नहीं हुए,' उसे ऐसा कुछ भी नहीं रहता। ज्ञानी स्वयं निरालंब हैं, वैसा स्वयं निरालंब हो जाना पड़ेगा, 'ज्ञानी' के निदिध्यासन से।

परिचय बढ़ने से टूटेंगे आवरण

प्रश्नकर्ता : कई बार मानो कि एकदम एकाकार हो जाए और फिर उसे घर बैठे आपके दर्शन हों लेकिन वे कैसे दर्शन कि जैसे कि आप

साक्षात ही हाज़िर हो गए हों और ऐसे आपके चरणों को स्पर्श किया हो, ऐसा अनुभव होता है, तो वह क्या है?

दादाश्री : वह जो अनुभव होता है, वह तो जिसने देखा हो न, उसी का सही अनुभव है। अभी मुझे देखने के बाद कई महात्माओं के मन में, रात-दिन दादा दिखते ही रहते हैं। उनके साथ बातचीत भी करते हैं। कितने ही लोग तो मुझे बताते हैं कि आप मेरे साथ आए थे। खुले आम बातचीत करने वाले भी बहुत हैं। सभी से मिलते हैं, बातचीत होती है क्योंकि दादा का सूक्ष्म शरीर बाहर सभी जगह पर घूमता रहता है, पूरे वर्ल्ड में घूमता रहता है और उसी का सब को अनुभव होता है।

प्रश्नकर्ता : दादा से वह शाश्वत संबंध चलता ही रहता है। ऐसे, जैसे कि आप टेलीफोन रिसीवर उठाएँ तो मैं आपसे बातचीत करता हूँ, तो वह बात ठीक है न?

दादाश्री : हाँ, आज रात को मैं आपके पास दो बार आ गया था! और कुछ लोगों को तो दर्शन भी हो जाते हैं, कुछ को नहीं भी होते। वह सब संयोग पर आधारित है।

प्रश्नकर्ता : कभी हमें दिखाई दे ऐसे दर्शन दें तो...

दादाश्री : हाँ, वैसा होगा। जैसे-जैसे हमारे साथ आपका परिचय बढ़ेगा न, वैसे-वैसे आवरण टूटते जाएँगे। आपके और मेरे बीच में जो आवरण हैं, उस कारण नहीं दिखाई देते। बाकी, ये तो ऐसे हैं कि निरंतर दिखाई दें। कितने लोगों को तो निरंतर एक क्षण के लिए भी इधर-उधर नहीं होते। निरंतर दिखाई ही देते हैं।

ये जो रात को सो जाते हैं न, उस समय नींद तो नहीं आती लेकिन पूरी रात दादा के साथ ही होते हैं। देखो कितने पक्के हैं? मैंने पूछा 'नींद आई थी?' तो कहते हैं 'नहीं, नींद नहीं आती पर ज़रा सा भी इधर-उधर नहीं होता। मैंने कहा 'तो, बहुत हो गया। इससे ज़्यादा और क्या चाहिए?' जिनकी हाज़िरी हो उनका निदिध्यासन रहता है। जो प्रत्यक्ष में नहीं हैं उनका निदिध्यासन नहीं रहता। फोटो में दर्शन करने से एकाग्रता आती है।

चरण स्पर्श का महत्व

प्रश्नकर्ता : आप जो चरण स्पर्श करवाते हैं वह किस रुढ़ि से है, उसमें आपका क्या प्रयोजन है?

दादाश्री : चरण स्पर्श तो यहाँ ज्ञानी के ही किए जा सकते हैं। ज्ञानी अर्थात् जहाँ परमात्मा प्रकट हो चुके हैं। जिनके भीतर परमात्मा प्रकट हुए हों, वहाँ करवाने चाहिए। पूरे ब्रह्मांड के परमात्मा प्रकट हुए हों और वहाँ यदि इसे लाभ लेना आए तो ठीक, वर्ना अगर नहीं आए तो उल्टा भी कर सकता है। मशीनरी से पाँच हज़ार वॉल्ट पर इन्जन चल भी सकता है और मार भी सकता है पूरे गाँव को।

प्रश्नकर्ता : यदि तांत्रिक विद्या हो तो मार सकता है।

दादाश्री : यह तो दरअसल भगवान की विद्या है। आप जो माँगो वह मिलेगा, ऐसी विद्या। आप माँगते हुए थक जाओगे। यदि पहचान जाएँ तो सिर्फ दर्शन करने से ही पाप भस्मीभूत हो जाते हैं। पहले दर्शन से नष्ट होते हैं उसके बाद स्पर्श से नष्ट हो जाते हैं। सिर्फ यों हाथ से छू लें न, तब भी नष्ट हो जाते हैं फिर चरण स्पर्श से नष्ट हो जाते हैं। ज्ञानविधि से भी बहुत से पाप नष्ट हो जाते हैं ज्ञानाग्नि में सब भस्मीभूत हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : सब से ज़्यादा किससे नष्ट होता है?

दादाश्री : ज्ञानाग्नि से। वर्ना लोगों को चौबीस घंटे खुद की जागृति रहे ऐसा हो ही नहीं सकता न! यहाँ पर पूरे दिन खुद की ही हर एक बात को भूल जाते हैं, वहाँ पर जागृति ही नहीं रहती न!

चरण स्पर्श से तार जोइन्ट

प्रश्नकर्ता : अपने शास्त्रों में चरण स्पर्श का महत्व बताया है, ज्ञानी पुरुष के अँगूठे को स्पर्श करके विधि करने का महत्व बताया है तो क्या इसका कोई वैज्ञानिक कारण है?

दादाश्री : हाँ, उनके चरणों में निरंतर मोक्ष ही है। भीतर आत्मा अलग ही हो जाता है। ज्ञानी पुरुष के, मुक्त पुरुष के चरण और उसमें भी यदि उनका स्पर्श हो जाए, खुद का हृदय यदि साफ है तो वह मुक्त ही हो जाता है। शास्त्रों में ऐसा कहा है कि ज्ञानी पुरुष के चरणों में ही मोक्ष है। मोक्ष और किसी जगह नहीं है। कहते हैं, पहले मोक्ष की शुरुआत वहाँ से होती है इसीलिए हमें ये चरण देने पड़ते हैं। बाकी, बाहर के लोग चरण नहीं छूने दे सकते क्योंकि सारी शक्ति खिंच जाती है। यहाँ तो ज़बरदस्त शक्ति उत्पन्न होती है और अगर खिंच जाए तो हमें हर्ज नहीं है। वर्ना नहीं दे पाते। इससे तो आदमी मर जाए। इसलिए कहीं भी चरण स्पर्श नहीं होते हैं, ऐसा अपने जैसा नहीं होता। सिर्फ यों ही माथा टेक आते हैं। बाकी, सभी जगह दूर रहकर ही नमस्कार होते हैं।

इसलिए शास्त्रकारों ने स्पष्ट लिखा है कि, ज्ञानी पुरुष के चरणों में ही मोक्ष है, वह साइन्टिफिक रास्ता है। भीतर आत्मा अलग ही हो जाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : चरण स्पर्श के पीछे कोई स्थूल और सूक्ष्म भावना रही हुई है?

दादाश्री : सिर्फ स्पर्श से ही यह बंधन रहा है। इस जगत् का बंधन ही स्पर्श से हुआ है और स्पर्श से ही छूटेगा लेकिन जिनका छूट गया है। जो मुक्त हैं, उनके स्पर्श से हम भी छूट सकते हैं। जो बंधे हुए हैं, उनके स्पर्श से हम बंध जाते हैं। इसीलिए चरण स्पर्श हैं। ज्ञानी के चरणों में मोक्ष है, ऐसा कहने का कारण यही है कि ज्ञानी खुद बंधन रहित हो चुके हैं, मोक्ष स्वरूप। वे निरंतर मोक्ष में ही रहते हैं इसलिए आप छूट जाते हो, वह स्वाभाविक है। इस प्रश्न का खुलासा हो गया?

प्रश्नकर्ता : हाँ, यदि मन में समर्पण की भावना नहीं हो, तब क्या चरण स्पर्श का कोई अर्थ है?

दादाश्री : नहीं। उसका कोई अर्थ नहीं, वह मीनिंगलेस है। यदि भीतर भावना नहीं हो तो मीनिंगलेस है। उसका मतलब लोगों को दिखाने का है। उसके बावजूद भी फायदा होता है, वह कैसा? भूख खत्म हो जाती है, स्वाद नहीं आता। सिर्फ आपकी भूख खत्म हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : क्या ऐसा हो सकता है कि चरण स्पर्श करने वाले सभी लोगों में समर्पण की भावना शायद न भी हो।

दादाश्री : चरण स्पर्श से तो मूल भगवान के चरण स्पर्श करते हो। वे इन आँखों से दिखाई नहीं देते लेकिन बाद में जब आपको ये दिव्यचक्षु मिलेंगे, तब आपको लगेगा कि, 'ओहोहो! जिन भगवान के दर्शन करते थे, चरण स्पर्श से अंदर वह तार जाता है। अंदर तार अर्थात् आपके भीतर वाले भगवान से तार। वे दोनों तार जॉइन्ट हो

जाते हैं, चरण स्पर्श करते ही। जैसे बटन दबाते ही लाइट हो जाती है, ऐसा है यह सब।

प्रश्नकर्ता : कोई चरण स्पर्श करे और यदि उसकी मन में अच्छी भावना न हो तो आपको पता चल जाता है क्या?

दादाश्री : इन सब का हम ध्यान नहीं रखते। हम तो, उसका मन ऐसे बदलते रहते हैं कि उसे अच्छी भावना हो जाए। गलत भाव क्यों रखें? मेहनत करते हैं तो गलत भाव क्यों रखें? मैं तो कहता हूँ कि स्वादिष्ट, रसास्वाद लेकर क्यों न खाएँ? ऐसा रूखा सूखा भोजन क्यों खाएँ?

प्रश्नकर्ता : लेकिन कोई यदि देखा-देखी चरण स्पर्श करे तो क्या होता है?

दादाश्री : देखा-देखी करने में हर्ज नहीं है। लाभ तो होगा लेकिन यदि उसका मन बदले और यदि भाव से करे तो काम निकल जाएगा।

चरणस्पर्श करने से आत्मा से जॉइन्ट होते हैं

प्रश्नकर्ता : अभी आपके चरण स्पर्श किए उससे एकदम रोमांच हो गया। मेरे रोंगटे खड़े हो गए और स्वप्न की तरह रोना आ गया। वह क्या है?

दादाश्री : ऐसा कहा गया है कि ज्ञानी पुरुष के चरणों में मोक्ष है। वहाँ पर मुक्ति की शुरुआत हो जाती है। आत्मा के साथ जॉइन्ट (अनुसंधान) हो जाता है। भीतर थोड़ा बहुत बदलाव लगा न?

प्रश्नकर्ता : बदलाव लगा इसीलिए तो मैंने आपसे पूछा न! यों तो कई संतों के दर्शन किए हैं मैंने।

दादाश्री : हाँ, ठीक है।

प्रश्नकर्ता : कह रहे हैं, 'आपके दर्शन से मुझे तृप्ति हो गई।'

दादाश्री : हाँ, बस। इस दर्शन से तो बहुत काम निकल जाता है। ऐसे दर्शन मिलते नहीं न! मिल गया है तो आपका कल्याण हो जाएगा। दर्शन करोगे तो भी बहुत हो गया। सिर्फ दर्शन, इन चरणों को स्पर्श कर गए, ज़्यादा न हो तो एक बार भी अगर स्पर्श हो गया न, तो बहुत हो गया।

प्रश्नकर्ता : दर्शन हुए और स्पर्श हुआ तो उसका असर आत्मा पर रहेगा ही।

दादाश्री : ज्ञानी पुरुष को देखने से जितने पाप नष्ट होते हैं, अभी आपके वे सब हो गए। भगवान को देखने से जितने पाप नष्ट होते हैं, उतने दर्शन हो गए। हल्का फूल बना दिया। इसीलिए दादा अब याद आते रहेंगे। दिखाई देते रहेंगे, दादा भगवान।

ज्ञानी में मूर्तामूर्त दोनों दर्शन होते हैं

यहाँ पर मनुष्य रूप में, मुख्य साकार भगवान किसे कहेंगे? क्या 'ज्ञानी पुरुष' को कहेंगे जिनमें मनुष्य रूप में निरंजन-निराकार प्रकट हो चुके हैं, वे साकार भगवान कहलाते हैं!!

प्रश्नकर्ता : लेकिन यदि आत्मा की किसी आकार के रूप में कल्पना करनी हो तो कैसी कल्पना करें?

दादाश्री : आत्मा का आकार नहीं है। उसके आकार की कल्पना करने जैसी नहीं है। उसके बजाय साकार भगवान के पास बैठना चाहिए। साकार भगवान, वही आत्मा का स्वरूप! जो देहसहित आत्मज्ञानी हैं, वे साकार भगवान कहलाते हैं, संपूर्ण देहमंदिर सहित उनके दर्शन करने चाहिए।

ज्ञानी के अलावा किसी को भी अमूर्त का भान नहीं रहता। जब तक अमूर्त अलग न हो जाए, तब तक देहधारी मूर्तिरूपी ही कहलाते हैं और इनमें

अलग हो चुका है, इसलिए मूर्त-अमूर्त। ज्ञानी में खुद में अलग हो चुका है इसलिए मूर्तामूर्त लिखा है। जिनमें अलग हो चुका है, वे मूर्तामूर्त कहलाते हैं। मूर्त भी है और अमूर्त भी है, दोनों अलग हैं।

मूर्त अर्थात् जिनके हम दर्शन करते हैं, इन्द्रियों से दर्शन होते हैं, अमूर्त के दर्शन, ज्ञानी पुरुष ने ज्ञान दिया हो तो उससे होते हैं। दोनों ही दर्शन हो सकते हैं। जबकि इस संसार व्यवहार में रिलेटिव में सिर्फ मूर्ति के ही दर्शन होते हैं। यदि अभी आप सीमंधर स्वामी के दर्शन करते हो तो सिर्फ मूर्ति के ही दर्शन होते हैं, अमूर्त के दर्शन नहीं होते। अमूर्त के दर्शन तो दिव्यचक्षु के बगैर नहीं हो सकते। ये दिव्यचक्षु मिले हैं इसलिए आप अमूर्त को भी दर्शन कर सकते हैं और मूर्त के भी दर्शन कर सकते हो। इन चर्मचक्षुओं से मूर्ति के दर्शन होते हैं और अमूर्त के दर्शन दिव्यचक्षु द्वारा होते हैं, अत: दोनों दर्शन एक साथ होते हैं।

प्रश्नकर्ता : इन्हें भी समझ सकते हैं और इन्हें भी समझ सकते हैं।

दादाश्री : हाँ, दोनों होते हैं। जिन्हें अपने आत्मा का दर्शन हो गया, आपमें आत्मा दिखाई दिया तो सभी में आत्मा दिखाई दिया। जो खुद के आत्मा को जानता है, वह औरों के आत्मा को भी जान सकता है। जिसने एक को जान लिया उसने सभी को जान लिया। जिसने आत्मा जाना उसने सबकुछ जान लिया। कुछ भी जानने को बाकी नहीं रहा।

प्रश्नकर्ता : 'अभेदता से दर्शन करते हुए अंत में अमूर्त मिल गए।'

दादाश्री : ज्ञानी पुरुष के अभेदता से दर्शन किए इसलिए अमूर्त पद प्राप्त हुआ। अनंत जन्मों से मूर्त भगवान को ही भजते (भक्ति) हैं। जिस देह को 'मैं' मानता था, वह सब चला गया और अमूर्त पद में बैठ गया।

सजीवन मूर्ति के मिले बगैर अमूर्त नहीं बन सकता। मूर्ति का अवलंबन मूर्त बनाएगा और अमूर्त का अवलंबन अमूर्त बनाएगा।

रिलेटिव, रिलेटिव के दर्शन करेगा तो रिलेटिव ही रहेगा। अमूर्त रियल के दर्शन करेगा तभी रियल में जाएगा।

जब तक अमूर्त के दर्शन नहीं हो जाते, 'ज्ञानी पुरुष अमूर्त के दर्शन नहीं करवा देते, तब तक मूर्ति को भजना (भक्ति) और जब अमूर्त की भजना करेगा तब मोक्ष होगा। मूर्ति की उपासना तो अनंत जन्मों से करते ही आए हैं न? 'ज्ञानी पुरुष' में तो अमूर्त है और मूर्ति भी है। 'ज्ञानी पुरुष' मूर्तामूर्त हैं इसलिए उनकी भजना करने से मोक्ष होता है!

प्रकट ज्ञानी के दर्शन से प्रकट होता है आत्मा

'ज्ञानी पुरुष' के पास तो 'खुद' को, 'खुद के' दर्शन करने हैं। जब तक खुद के आत्मा का वह अनुभव नहीं हो जाता, तब तक ज्ञानी पुरुष ही खुद का आत्मा हैं इसलिए ज्ञानी पुरुष के दर्शन करते रहना। वास्तव में खुद के आत्मा का ही प्रकट करते रहना है लेकिन जब तक खुद के आत्मा का स्पष्टवेदन नहीं हो जाता, तब तक ऐसा मानकर चलते रहना कि ज्ञानी पुरुष ही खुद का आत्मा है।

जो खुद के स्वभाव से जीवित रहते हैं, उनके दर्शन करने चाहिए। यदि पहचानकर दर्शन करोगे तो काम हो जाएगा।

ज्ञानी पुरुष की हाज़िरी से ही सब बदल जाता है। यह कोई उपदेश नहीं दिया, उसके बावजूद भी वातावरण से ही बदलाव हो जाता है।

गुरुपूर्णिमा के दिन पूर्ण अद्वैत भाव में

प्रश्नकर्ता : आप सत्संग करते हैं और गुरुपूर्णिमा के दिन दर्शन देते हैं तो उन दोनों में अंतर है क्या?

दादाश्री : बहुत अंतर है। यह तो सत्संग करते समय 'बाहर' निकल गया कहलाता है। वह गुरुपूर्णिमा का दर्शन तो ओहोहो! वह तो पूर्ण दर्शन कहलाता है। एक बार भी दर्शन कर गया तो बहुत हो गया। उस दिन हम 'आइए चंदूभाई! आइए फलाने भाई!,' उसमें नहीं पड़ते हैं। पूर्ण भाव में रहते हैं और जबकि यहाँ पर, अन्य किसी दिन तो हम बुलाते हैं, पहचानते भी हैं। उस दिन तो हम पहचानते भी नहीं और बुलाते भी नहीं हैं। उस वक्त अद्वैत भाव में रहते हैं और अभी द्वैत में रहना पड़ता है।

वह ऐसा है न कि नया वर्ष, जन्मजंयती और गुरुपूर्णिमा के दिन जो दर्शन होते हैं, वे अंतिम प्रकार के दर्शन होते हैं, पूर्णिमा के दर्शन होते हैं।

प्रश्नकर्ता : सही बात है?

दादाश्री : रोज़ तो कभी चौदस के, तेरस के भी दर्शन हो जाते हैं। जब यहाँ व्यवहारिक बातचीत भी चल रही हो न, तब तेरस और बारस के भी हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा का संपूर्ण स्वरूप साल में तीन दिन होता हैं, गुरुपूर्णिमा, दिवाली और जन्मजयंती। दिवाली का क्या महत्व है?

दादाश्री : दिवाली के दिन दो-पाँच हज़ार लोगों को दर्शन करना हो तो इस अवसर पर वे सब इकट्ठे हो जाते हैं न! अत: महत्व अन्य कुछ नहीं। उस दिन हम तय करते हैं इसलिए फिर उस अनुसार रहते हैं जबकि इस गुरुपूर्णिमा पर तो (दर्शन) होते ही हैं। जन्मजयंती पर ज़्यादा अच्छे होते हैं। ऐसा बारह महीनों में दो दिन होता है, रोज़ नहीं होता, एक तो गुरुपूर्णिमा और दूसरा जन्मजयंती। तब मैंने सब से कहा 'एक ही करो। तीस हज़ार रुपिया क्यों खर्च करने?' तो कहने लगे, 'नहीं, एकाध बढ़ानी है।' हमें तो, आपको जिस दिन सूरत में ज्ञान प्राप्त हुआ न, उस दिन भी दर्शन कार्यक्रम रखना है।' अरे भाई, बढ़ा क्यों रहे हो?

संपूर्ण प्रकट के दर्शन

प्रश्नकर्ता : दादा! जहाँ-जहाँ जन्मदिन और गुरुपूर्णिमा का उत्सव होता है, उस समय के दर्शन कुछ अलग ही होते हैं। मुझे खंभात में ठीक वैसे ही दर्शन हुए थे।

दादाश्री : हाँ, वे दर्शन अलग ही होते हैं इसीलिए तो हम कहते हैं न कि उस दिन दर्शन करने आना। उस दर्शन का तो वर्णन ही नहीं कर सकते। उस घड़ी संपूर्ण रूप से प्रकट रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो संपूर्ण दर्शन अर्थात् क्या?

दादाश्री : संपूर्ण अर्थात् जिन्हें भगवान कहा जाता है न, जिन्हें हम मूर्ति के रूप में नहीं कहते हैं कि ऋषभदेव भगवान, महावीर भगवान, कृष्ण भगवान? उस दिन वैसे दिखाई देते हैं। किसी को दिखाई देते हैं किसी को नहीं भी दिखाई देते लेकिन वे उस समय संपूर्ण रूप से होते हैं।

जब हमारी जन्मजयंती मनाई जाती है न, तब अगर आप आओ तो उस समय संपूर्ण रूप से रहते हैं, पूरे दिन संपूर्ण रूप से रहते हैं। अभी तो यह जो विधि करते हैं न, उतने समय तक ही, उसके बाद नहीं रह सकते। जब तक केवलज्ञान नहीं हो जाता तब तक संपूर्ण रूप से नहीं रह सकते। अब यह जो हमारी जन्मजयंती है न, उस दिन एकदम क्लियर (संपूर्ण रूप से)

रहते हैं। इसीलिए हम कहते हैं न, सिर्फ दर्शन करके जाना। वे तो संपूर्ण दर्शन, वे कोई ऐसे वैसे दर्शन नहीं कहलाते! जब गुरूपूर्णिमा होती है, या कोई ऐसा जो कुछ भी होता है, तब वैसे दर्शन होते हैं। उस समय चारों महीनों का फल मिल जाता है। आज वैसे दर्शन नहीं होंगे जबकि तब संपूर्ण रूप से वीतराग दर्शन होते हैं।

प्रश्नकर्ता : वीतराग दर्शन होते हैं!

दादाश्री : तब कुछ भी दखल ही नहीं रहता न! उस दिन हमारा ऐसा नहीं रहता कि 'आइए चंदूभाई'। अभी तो 'आइए चंदूभाई, आइए, आपका कैसा चल रहा है?' ऐसा दखल रहता है। तब ऐसा सब दखल में हम नहीं पड़ते न! उस दिन पूर्ण रूप से दर्शन होते हैं। उस दिन सांसारिक बातों में नहीं पड़ते हैं न!

पूर्णदशा से खिलता है, आत्मचंद्र

प्रश्नकर्ता : गुरुपूर्णिमा के दिन, जन्मजयंती के दिन और दिवाली के दिन, आपको पूरी तीन सौ साठ डिग्री रहती हैं, क्या वह बात सही है?

दादाश्री : हाँ, रहती हैं। उस दिन हमारा ऐसा नहीं रहता कि 'आइए चंदूभाई', कोई दखल नहीं, इसलिए उस दिन सब को फुल दर्शन होते हैं और बहुत लाभ मिलता है।

हमारे यहाँ ये तीन दिन उत्तम कहलाते हैं: एक नया साल, यह जन्मजयंती और यह गुरुपूर्णिमा। उन दिनों किसी से कुछ झंझट नहीं रहती न। हम अपने पूर्ण स्वरूप में एकाकार रहते हैं। मैं (ज्ञानी पुरुष) अपने स्वरूप में (दादा भगवान के साथ) एकाकार रहता हूँ इसीलिए उसका फल मिलता है! इसीलिए उस पूर्ण स्वरूप के दर्शन करने का माहात्म्य है न!

इसलिए सभी से यह आग्रह करते हैं कि और कभी नहीं आओगे तो चलेगा लेकिन उस दिन दर्शन कर जाना क्योंकि उस दिन संपूर्ण रूप से ऐश्वर्य प्रकट हुआ होता है। चित्तवृत्ति पूर्ण रूप से शुद्ध हो चुकी होती है इसलिए संपूर्ण रूप से ऐश्वर्य उत्पन्न होता है। उस ऐश्वर्य के दर्शन करेंगे न, तो आपका भी ऐश्वर्य प्रकट हो जाएगा!

सामान्य भाव के दर्शन में प्रकट होते हैं परमात्मा

इस गुरुपूर्णिमा (1980) पर आधे खंभात शहर ने दर्शन किए। यह जो शोभा यात्रा निकली न, तो आधे शहर ने दर्शन किए क्योंकि आज तो हमारे आशीर्वाद बहुत बड़े होते हैं और जब हम दो ही लोग बैठे हों न, तब मैं आपके साथ बातचीत में लग जाता हूँ। मैं अपने ज्ञान में ही रहता हूँ लेकिन सहज रूप से बातें हो जाती हैं इसलिए असर होता है, इफेक्ट होता है और जब बहुत सारे लोग होते हैं न, तब फिर दर्शन में ही रहते हैं, सामान्य भाव से रहते हैं। उस सामान्य भाव में, उस समय परमात्मा प्रकट हुए दिखाई देते हैं। यदि अन्जान लोग भी दर्शन कर लें तो उनका काम हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, सभी के चेहरे पर अलग ही प्रकार का आनंद था।

दादाश्री : आनंद अलग ही था, हाँ।

प्रश्नकर्ता : दादा, इन सभी को यहाँ पर यही आशीर्वाद चाहिए कि चौबीस घंटे निरंतर दादा का ही निदिध्यासन रहे। और कुछ नहीं चाहिए।

दादाश्री : वह तो जब शोभायात्रा में निकले थे तब, शोभायात्रा में दर्शन करने पर वैसा रहता है। यानी जन्मजयंती का दिन हो, तब रहता है।

प्रश्नकर्ता : ठीक है दादा।

दादाश्री : जब शोभायात्रा में निकलते हैं तब

आपको निदिध्यासन रहता है। उस समय क्लियर रहता है। फुल फेज़ में रहता है।

ज्ञानी दर्शन से दिल में ठंडक

जब हमारी जन्मजयंती हो या फिर जब हम अंदर आते हैं, सत्संग में हम दर्शन देते हैं उतने समय तक एकदम क्लियर दर्शन देते हैं। वह अपने आप उदय में नहीं आया होता है, वह दिया हुआ होता है। अहंकार बगैर दिया होता है। अर्थात् जो भोक्ता पद वाला अहंकार है, वह भी नहीं रहता।

प्रश्नकर्ता : भोक्ता पद वाला जो अहंकार है, वह उस समय काम नहीं करता।

दादाश्री : उस समय फुल आत्मा दिखा देता हूँ, देखने वाला होना चाहिए। वर्ना सभी लोग कैसे प्राप्ति कर पाएँगे, भीतर ठिकाने पर ही नहीं रहता न कभी भी। इससे तो ठंडक हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, ठंडक हो जाती है।

दादाश्री : हाँ, भूल ही जाते हैं पूरे जगत् को!

प्रश्नकर्ता : संसार विस्मृत हो जाता है।

दादाश्री : तेरे दिल में ठंडक नहीं हुई थी?

प्रश्नकर्ता : हो गई थी।

दादाश्री : हाँ, ठंडक हो जाती है। ऐसे दर्शन तो कभी भी नहीं होते। अलौकिकता मिलती नहीं है न!

दादा निमंत्रित करें जन्मजयंती में

जन्मजयंती में ज़रूर आना, उस समय सभी इकट्ठे होते हैं। जब हमारी जन्मजयंती मनाई जाती है तब खुद परमात्मा ही बैठे रहते हैं, उन्हीं के दर्शन होते हैं इसलिए लोगों का काम हो जाता है न! वे दर्शन कुछ और ही प्रकार के होंगे! फुल दर्शन! तभी तो लोग भागदौड़ करते हैं। एक ध्येय वाले सभी इकट्ठा होते हैं और लोगों को दर्शन होते हैं! महात्माओं को दर्शन होते हैं न! सभी मुंबई से आते हैं, अहमदाबाद से आते हैं, मद्रास से आते हैं, कलकत्ता से आते हैं इसलिए लाभ उठाना।

हम जहाँ हों वहाँ दर्शन करने आना सभी। हमारी जन्मजयंती अहमदाबाद में मनाई जाएगी वहाँ भी आना। दस-दस दिनों तक वहाँ हंगामा रहेगा। उसमें से दो-चार दिन चक्कर लगा जाना न! वहाँ रहने-खाने की सभी व्यवस्था कर रहे हैं। है फिर दूसरी कोई झंझट? वहाँ दादा के दर्शन होंगे। क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : दर्शन होंगे।

दादाश्री : जन्मजयंती के दिन ज़रा दूर से दर्शन करें न, तो वीतरागता देखने मिलती है।

जन्मजयंती और यह गुरुपूर्णिमा, तब पूर्ण स्वरूप के दर्शन होते हैं और आपकी बहुत प्रकार की कमियाँ दूर हो जाती हैं। वह स्वरूप ही अलग प्रकार का होता है उस दिन जबकि अभी दर्शन करने वाले दो ही लोग होते हैं तो इस समय स्वरूप अलग होता है। जब सौ लोग हों, उस समय स्वरूप अलग होता है और तीन सौ लोग, उस समय स्वरूप अलग होता हैं। उस दिन तो दो पाँच हज़ार लोग दर्शन करते हैं, उस समय स्वरूप अलग ही प्रकार का होता है 'दादा भगवान' का। सिर्फ दर्शन करने से ही आपको सौ दिन का सबकुछ मिल जाता है इसलिए इस लाभ को मत छोड़ना। जिसे लेना है उसके लिए और जिसे नहीं लेना हो उसके लिए तो कोई उपाय ही नहीं है, हम तो आपको सिर्फ समझा सकते हैं, समझना या नहीं समझना, वह आपके हाथ में है। चाहे कुछ भी करके पूरे परिवार को साथ लेकर आना।

ओपन टू स्काई, प्रेमात्मा

वीतराग के दर्शन हुए, ओपन आत्मा के दर्शन, आज वे सारे ही दर्शन हो गए। यहाँ से गाड़ी में खुला आत्मा घूमा, वह वहाँ ठेठ मंडप में जाने तक खुला आत्मा। खाते समय खुला आत्मा नहीं था। खाने से पहले तक खुला आत्मा था, अनावृत। देह वगैरह कुछ नहीं, ओपन टू स्काई आत्मा घूमा आज गाड़ी में और पच्चीस सौ लोग दर्शन कर गए, वह भी ओपन टू स्काई के दर्शन किए। कल्याण ही हो गया न उनका! संसार ने ऐसा प्रेम कभी देखा ही नहीं। जहाँ पर राग-द्वेष की एक बूँद भी नहीं, ऐसा प्रेम। फिर भी राग नहीं है। अत्यंत प्रेम है दादा पर फिर भी राग नहीं। प्रशस्त राग भी नहीं। पहले जो प्रशस्त राग हो गया है, वह होगा लेकिन आज नहीं है प्रशस्त राग। सिर्फ प्रेम और प्रेम, वही परमात्मा। शुद्ध प्रेम, वही परमात्मा है, जो बढ़े नहीं-घटे नहीं! क्या एक मिनट के लिए भी कम-ज़्यादा हुआ था?

प्रश्नकर्ता : एक समान।

दादाश्री : आठ बजे से लेकर एक बजे तक बैठे थे, पाँच घंटे। आठ बजे यहाँ से घोड़ा गाड़ी में बैठे, आत्मा शोभायात्रा के लिए निकला। दो घोड़ों की दो लगामें, सिर्फ आत्मा ही, खुला, ओपन आत्मा।

मिलती है, सौ जन्मों के संयम के बराबर पुष्टि

प्रश्नकर्ता : आपकी वीतरागता दिखाई दे रही थी।

दादाश्री : वीतरागता कब दिखाई देती है? अक्रम ज्ञानी हों, तभी वीतरागता दिखाई देगी। अन्य कोई ज्ञानी हों तो वहाँ वीतरागता नहीं दिखाई देगी। वहाँ संयम दिखाई देगा। क्या दिखाई देगा।

प्रश्नकर्ता : संयम दिखाई देगा।

दादाश्री : वह संयम ऐसा संयम होता है जो वापस असंयम भी हो सकता है। वह वीतरागता नहीं है। वह क्रमिक मार्ग है। यह वीतरागता देखी न? और वीतराग प्रेम भी देखा न? और खुद अपनी स्थिति कैसी थी, वह भी देखी न? खुद की स्थिति का लेवल क्या खुद नहीं जानते? आत्मा थर्मामीटर है, आत्मा सब जानता है कि चंदूभाई की क्या स्थिति है।

इन दिनों दर्शन करके जो पुष्टि मिली है न लोगों को, वह सौ जन्मों के संयम जितनी पुष्टि मिल गई है। सौ जन्मों तक संयम करने पर पुष्टि का जितना पुंज इकट्ठा होता है उतना यहाँ पर मिल गया है आज, एक ही दिन में। फिर जिसकी जैसी समझ। कम-ज़्यादा ही सही, लेकिन उस पुष्टि का पुंज मिल गया है। बिल्कुल नासमझ के हाथ में भी यह पुंज है।

इस तरह के एक ही दिन आप वहाँ आओगे तो बहुत हो गया लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि दूसरा पुरुषार्थ न करो। अर्थात् आप ऐसा नहीं मानना कि 'बहुत हो गया'। कई लोग जो नहीं आ पाते, वे भले ही ना आएँ। वे नहीं आ सके उसमें उनके योग वैसे होंगे, संयोग वैसे होंगे, तो उनका योग ऐसा हो गया होगा, सभी संयोग ऐसे हो गए होंगे लेकिन यदि ऐसा दर्शन सिर्फ एक दिन ही कर ले न, तो बहुत हो गया। जो पुरुषार्थ कर रहे हो, उस पुरुषार्थ को मत छोड़ना क्योंकि ऐसा मोक्ष मार्ग दोबारा नहीं मिलेगा। एक-दो तीन जन्मों में मोक्ष में जा पाएँ, ऐसा मार्ग नहीं मिलेगा। ज़्यादा से ज़्यादा पंद्रह जन्मों में तो मोक्ष हो ही जाएगा! फिर अन्य कोई आशा क्यों रखें? ठीक है न?

क्लियर विज़न से पूर्ण दर्शन होते हैं

प्रश्नकर्ता : गुरुपूर्णिमा हो या जन्मजयंती,

उन दिनों दादा के दर्शन करने से क्या अपने अतंराय टूट जाते हैं?

दादाश्री : यदि अपना विज़न कुछ खुला हुआ है, क्लियर है तो पूर्ण दर्शन होंगे। पूर्ण, तीन सौ साठ के दर्शन। यदि आपका विज़न खुला हुआ है तो और यदि आवरण वाला है तब वैसे दर्शन होंगे।

प्रश्नकर्ता : हमारा विज़न क्लियर होगा तो तीन सौ साठ के दर्शन होंगे वह कैसे? हमारा विज़न क्लियर का क्या अर्थ है?

दादाश्री : आपका अंत:करण शुक्ल हो, बाहर का कोई भी विचार तक न आए और अगर एक घंटे तक भी अच्छा *गुंठाणा* (४८ मिनिटस्, गुणस्थानक) रहा तो विज़न क्लियर हो जाता है। जैसे कि अगर किसी चीज़ को हमें आईने में देखना हो तो उसे साफ करने के बाद क्लियर हो जाता है न, वैसा। उस दिन पूर्ण दर्शन होते हैं, तीन सौ साठ डिग्री के। जबकि अन्य किसी दिन आप आओ तो इधर-उधर की खटपट में रहते हैं। तब संपूर्ण दर्शन नहीं हो पाते। जब ज्ञान देते हैं, उस समय हम संपूर्ण रूप से दर्शन में रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, जब मैं वह अंतिम गाथा बोलता हूँ, 'देह छता जेनी दशा...' तब आपके संपूर्ण रूप से दर्शन होते हैं।

दादाश्री : हाँ, वह सब दिखाई देता है, वह स्वभाविक है। वह तो यदि आपका विज़न खुला हुआ है तब भी दिखाई देगा भाई! विज़न पर आधारित है, अपने आईने पर दूसरे का आईना काम नहीं आता। सबकुछ है। उसे दिखाई देना चाहिए।

पूर्ण स्वरूप के दर्शन से होती है पूर्णता

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसा तो है न कि एक बार पूर्ण स्वरूप देख लें, पूर्ण स्वरूप के दर्शन हो जाएँ तो फिर उसका खुद का भी पूर्ण स्वरूप आ जाता है? उदाहरण के तौर पर दादा की यदि सौ प्रतिशत पहचान लें तो सौ प्रतिशत पूर्णरूप से दर्शन हो जाएँगे?

दादाश्री : अस्सी प्रतिशत करोगे तो अस्सी प्रतिशत होंगे। जितना उनके लिए निश्चित किया उतना ही उसका हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अब यह जो जन्मदिन है और यह जो पूर्णिमा का दिन है इन दोनों दिन आपके जो दर्शन होते हैं...

दादाश्री : वे दर्शन क्लियर होते हैं।

प्रश्नकर्ता : वे दर्शन क्लियर होते हैं, लेकिन अब उसमें भी पूर्ण दशा में कुछ न कुछ फर्क महसूस होता है न, हर एक व्यक्ति को।

दादाश्री : हाँ। सब को अपनी-अपनी स्थिति के अनुसार फर्क पड़ जाता है लेकिन खुद को क्लियर का लाभ मिलता है।

प्रश्नकर्ता : दादा के जो दिव्य दर्शन होते हैं, दादा को देखें तो वे खूब प्रकाशमान दिखाई देते हैं, या अलग-अलग स्वरूपों में दिखाई देते हैं हमें। जिस तरह से देखना हो उस तरह से, वे दिव्य दर्शन होते हैं, और इसमें यह जो पूर्ण स्वरूप है, इनका कोई संबंध है क्या?

दादाश्री : संबंध है न, दिव्य दर्शन उच्चता की और ले जाते हैं। अब वह जो पूर्ण स्वरूप है उससे हमें पूर्णता पर श्रद्धा बैठ जाती है अपने आप पर कि ऐसी पूर्णता हो जाएगी।

चौदह लोक के नाथ के दर्शन

प्रश्नकर्ता : दादा, आप की उपस्थिति में हमें विशेष शांति बरतती है।

दादाश्री : वह तो, इस उपस्थिति की तो बात ही अलग है! मेरी उपस्थिति तो आपको दिखाई ही देती है लेकिन मुझे जिनकी उपस्थिति दिखाई देती है, उनकी उपस्थिति आपको भी बरतती है। चौदह लोक के नाथ, पूरे ब्रह्मांड के नाथ भीतर प्रकट हुए हैं, उनका मुझे भी लाभ मिलता है और आपको भी लाभ मिलता है। इतनी निकटता होनी चाहिए, बस। जितने उनके निकट, उतना अधिक लाभ और आसपास का वातवरण भी अच्छा ही रहता है। उसमें भी, वातावरण में फर्क पड़ जाता है लेकिन निकटता का लाभ तो मिलेगा ही और वह भी समझने से, समझे बगैर लाभ नहीं मिलता।

इसलिए हम कहते हैं न कि, जो हमें हमारी भूलें दिखाते हैं, वे चौदह लोक के नाथ हैं। उन चौदह लोक के नाथ के दर्शन करो। भूल दिखाने वाले कौन हैं? चौदह लोक के नाथ!

उन 'दादा भगवान' को तो मैंने देखा है, और संपूर्ण दशा में हैं अंदर! उसकी गारन्टी देता हूँ। मैं भी उन्हें भजता हूँ न! और आपको भी कहता हूँ कि, 'भाई, आप दर्शन कर जाओ। 'दादा भगवान' 360 डिग्री पर हैं और मेरी 356 डिग्री हैं इसीलिए हम दोनों अलग हैं, वह प्रमाणित हो गया या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वैसा ही है न!

दादाश्री : हम दोनों अलग हैं। भीतर प्रकट हुए हैं, वे दादा भगवान हैं। वे संपूर्ण रूप से प्रकट हो चुके हैं। परम ज्योति स्वरूप!

इतना फर्क है, ज्ञानी और भगवान में

प्रश्नकर्ता : दादा! ज्ञानी और भगवान में क्या फर्क है?

दादाश्री : ज्ञानी और भगवान में इतना ही फर्क है कि ज्ञानी समझ सकते हैं, सभी कुछ देख सकते हैं लेकिन जान नहीं सकते। ये जो दिखाई देते हैं न वे तो भादरण के पटेल हैं और मैं तो ज्ञानी पुरुष हूँ और दादा भगवान अलग हैं, वे तो परमात्मा ही हैं! चौदह लोक के नाथ हैं।

मेरी 360 डिग्री पूर्ण नहीं हुई और 356 पर रुक गया इसीलिए अंदर जो प्रकट हुए हैं उन भगवान में और मुझमें जुदापन है। यदि मेरा 360 हो गया होता न, तो हम दोनों एकाकार हो जाते थे लेकिन अभी यह जुदापन रहा है क्योंकि इतना यह निमित्त होगा न, लोगों का कार्य करने का इसलिए जुदापन रहा है। अत: जितने समय तक हम भगवान के साथ एक रहते हैं, अभेद भाव में रहते हैं, उतने समय तक संपूर्ण स्वरूप में रहते हैं और जब वाणी बोलते हैं तब अलग (जुदापन) हो जाता है।

ज्ञानी पुरुष, वे ही देहधारी परमात्मा

प्रश्नकर्ता : आप तो आत्मा हैं तो फिर आपमें कौन सा भाग ज्ञानी है?

दादाश्री : जितना आत्मा हुआ, उतना ही ज्ञानी। जितना 356 का आत्मा हुआ, उतना ही 356 का ज्ञानी। आत्मा ज्ञानी ही है लेकिन उसका आवरण हटना चाहिए। जितना आवरण हटा, 360 डिग्री का हट गया तो संपूर्ण हो जाएगा। 356 का हटा तो चार डिग्री का आवरण है। आपको तो और ज़्यादा डिग्री का आवरण है। धीरे-धीरे आपके आवरण टूटते जाएँगे। आवरण टूट जाएँ तो वह खुद ही ज्ञानी है। आवरण की वजह से वह अज्ञानी दिखाई देता है।

356 डिग्री अंतरात्मा की और 360 परमात्मा की। इस ज्ञान की प्राप्ति के बाद आप भी अंतरात्मा हो और हम भी अंतरात्मा हैं। हमारी डिग्री 356 है।

प्रश्नकर्ता : दर्शन में 360 डिग्री है, ज्ञान में नहीं आ पाती इसीलिए यह सब है न?

दादाश्री : हाँ, लेकिन वह पद नहीं माना जाएगा न! फिर भी श्रीमद् राजचंद्र ने खुले दिल से कहा है कि 'ज्ञानी पुरुष, देहधारी परमात्मा ही हैं'। ऐसा किसलिए कहा था? खुद की आबरू बढ़ाने के लिए नहीं। उनके पीछे पड़ोगे तो आपका काम हो जाएगा, नहीं तो, काम होगा ही नहीं। देहधारी परमात्मा के प्राकट्य के बिना कभी भी काम नहीं हो सकता। देहधारी के रूप में परमात्मा ही हैं।

प्रश्नकर्ता : जब आप कहते हैं कि 'ये ज्ञानी पुरुष हैं' तो इससे क्या संकेत देते हैं आप?

दादाश्री : अंतरात्मा! वह अंतरात्मा चार डिग्री के बाद में परमात्मा बनने वाला है। मान लो कोई कलेक्टर है लेकिन उसका पहला साल है, अभी ही कलेक्टर बना है नया-नया और दूसरे किसी की बीस साल से कलेक्टर की नौकरी हो चुकी है, तब वह कमिश्नर बनता है। बीस साल की नौकरी हो गइ है, कमिश्नर बनने के एक महीने पहले वह कलेक्टर था और यह भी कलेक्टर था लेकिन दोनों का एक सरीखा नहीं कहलाएगा। यह तो कल कमिश्नर बन जाएगा और उसको तो अभी देर लगेगी, बीस साल बीतने के बाद।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आप जो कहते हैं कि 'अंदर भगवान बैठे हैं और मैं 356 पर हूँ', तब आत्मा तो एक ही है।

दादाश्री : भगवान अंदर बैठे हैं, मैं 356 डिग्री पर हूँ, यह बात करनी वह रेग्युलर कहलाता है, ब्योरेवार ऐसा ही है। अर्थात् यह किसके जैसा है ये जो कलेक्टर हैं, वे तो बीस साल तक कलेक्टर रह चुके हैं इसलिए जानते ही हैं कि न जाने कब मुझे कब कमिश्नर बना दें, कहा नहीं जा सकता। उसी प्रकार ये ज्ञानी भी जानते हैं कि अपने 360 कब पूरे हो जाएँगे, कहा नहीं जा सकता। अर्थात् खुद अपने पूर्ण पद को जानते हैं लेकिन अभी जिस पद पर है, लोगों को वैसा ही बताते हैं। यह वीतरागों का ज्ञान है। ज़रा सा भी गप्प या टेढ़ा-मेढ़ा कुछ नहीं चलता। 'है' उसे 'है' ही कहना पड़ेगा और जो 'नहीं है' उसे 'नहीं' कहना पड़ेगा। जो 'नहीं है' उसे 'है' नहीं कहलवाते। हम से ऐसा कहलवाने जाएँगे तो हम मना कर देंगे। हम अब अशक्त हैं, हमारी शक्ति काम नहीं कर रही। जो 'नहीं है' उसे 'है' कहलवा ही नहीं सकते।

ज्ञानी की करुणा

दुनिया में बाकी सब लोग एक हो जाएँगे लेकिन मैं, ज्ञानी व अंबालाल एक नहीं होंगे। 'मैं' कौन? 'मैं', वे 'दादा भगवान' हैं। हम ज्ञानी हैं और अंबालाल वे 'पटेल' हैं। मैं, ज्ञानी व अंबालाल एक नहीं होंगे। यह योग नहीं मिलेगा, बाकी सब योग मिल जाएँगे। भगवान खुद हाज़िर नहीं होते। ये जो भीतर हो चुके हैं, वे पूरे ब्रह्मांड के भगवान हैं यह बता रहा हूँ, उसकी गारन्टी देता हूँ। 'जो जितना कनेक्शन कर लेगा, उतना उसके बाप का।'

वास्तव में, मैं ये तीन विभाग तो कर देता हूँ। मैं, ज्ञानी और अंबालाल, तीन विभाग कर देता हूँ और उसके पीछे करुणा है। वास्तव में दो ही भेद हैं, दादा भगवान और अंबालाल, दो ही हैं लेकिन तीन करने का कारण यह है कि दूषमकाल के जीव शंकालु हैं। बेकार की शंकाओं से तो बल्कि इनका बिगड़ेगा इसलिए उन्हें जुदा कर दिया, ताकि शंका ही उत्पन्न नहीं हो!

इससे उसे ठंडक रहेगी। हाँ! ताकि अब उसका पागलपन खड़ा न हो। ताकि यहाँ से भाग न जाए, यहाँ आया हुआ भटक न जाए।

लोगों का कल्याण किस तरह हो वही हमें देखना है और उसी के लिए हमारा जन्म हुआ है।

खुला रहस्य, अक्रम विज्ञान के माध्यम से

यह तो जितनी बातें निकलें उतना ठीक है, वर्ना तो निकले ही नहीं। दृष्टि के बिना नहीं निकल सकती कभी भी। यह सब तो मैं आपके लिए बता रहा हूँ।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अक्रम विज्ञान ने अंतर का पूरा रहस्य ज्ञान खोल दिया है।

दादाश्री : कभी खुला ही नहीं था। इसमें तो अंत तक एक-एक कदम चले हैं।

प्रश्नकर्ता : इन शास्त्रों में या कोई दूसरा अंदर की ऐसी बातें नहीं बता सका है।

दादाश्री : हो ही नहीं सकता न! जानेगा ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : आत्मा है और बाकी सब *पुद्गल* है। बस!

दादाश्री : अंत तक यही है और जब केवलजान जान लेते हैं तब ऐसा नहीं बताते हैं। ऐसा तो मैंने बताया ही नहीं कभी, यह तो आज ही बताया है क्योंकि हम संपूर्ण दशा में रहते हैं। अकेले में 360 पर। दो में नहीं रहते। 356 के दर्शन होते हैं और 360 पर हम रहते हैं इसीलिए दर्शन करने वालों को बहुत फायदा है! अभी बात करते समय इतना फायदा नहीं होता।

दादा के दर्शन करवाएँगे पूर्णाहूति

प्रश्नकर्ता : हम क्या कहना चाहते हैं? चौदह लोक के नाथ इस तरह सामने से आकर नहीं मिलते। वे तो इन दादा के थ्रु आपको मिले हैं। क्या हुआ है?

प्रश्नकर्ता : दादा के थ्रु मिले हैं।

दादाश्री : हाँ। इसलिए दादा कहते हैं कि भाई, काम निकाल लो। किसलिए? कि ऐसे नाथ नहीं मिलेंगे। जब नाथ प्रकट होते हैं तब वे वीतराग हो चुके होते हैं। यहाँ नाथ प्रकट हुए हैं और ये खटपटियाँ वीतराग हैं इसलिए पकड़ में आ गए हैं। अत: मैं कहता हूँ कि काम निकाल लो। पूर्णाहूति करवा देंगे। अनंत जन्मों के नुकसान की, भरपाई करवा देंगे तेजी से।

प्रश्नकर्ता : हम सब को सच्चिदानंद परब्रह्म का साक्षात्कार कब होगा?

दादाश्री : हो जाएगा। यह तो आप दादा के दर्शन करने लगे हो न इसलिए अब भीतर वही होने लगा है। यहाँ चौदह लोक के नाथ हैं और फिर कितना ज़ोर देकर कहें कि गाड़ी छूटने वाली है। क्या यह समझ में आता है कि गाड़ी छूट जाएगी?

प्रश्नकर्ता : हाँ, मोक्ष की गाड़ी छूट जाएगी।

दादाश्री : नहीं! ये चौदह लोक के नाथ प्रकट हुए हैं, फिर कभी ऐसे दर्शन नहीं होंगे। बाकी, वे तो सिर्फ तीर्थंकरों में ही प्रकट होते हैं।

दादा भी दादा के दर्शन करते हैं

प्रश्नकर्ता : दादा, आप (भीतर वाले) दादा के दर्शन कैसे करते हैं?

दादाश्री : हमें तो आसानी से दर्शन होते ही रहते हैं। हमें उन्हीं में रहना है न इसलिए दर्शन होते ही रहते हैं। बाहर रहना ही नहीं न?

प्रश्नकर्ता : लेकिन, दादा सूरत स्टेशन पर जब आपको ज्ञान हुआ, उस समय का पूछ रहा हूँ, उस समय कैसे दर्शन हुए थे?

दादाश्री : ऐसा लगा मानो इसमें से अलग ही हो गए हों।

प्रश्नकर्ता :एब्सोल्यूटली (संपूर्ण रूप से)?

दादाश्री : हाँ, एब्सोल्यूटली।

प्रश्नकर्ता : और दादा के वे दर्शन?

दादाश्री : हाँ, एब्सोल्यूट अलग।

प्रश्नकर्ता : तो उससे पहले का कोई अनुभव नहीं था न? वह जो मोमेन्ट (क्षण) था, दादा और वे दोनों जब अलग हो गए, उससे पहले आपको कुछ ऐसा लगा था कि कुछ होने वाला है?

दादाश्री : नहीं, ऐसी साधारण... एक प्रकार की शांति बहुत रहती थी।

प्रश्नकर्ता : उससे पहले?

दादाश्री : शांति बहुत ही रहती थी लेकिन वह अंहकार सहित शांति कही जाएगी। वह किसी काम की नहीं है न! वैसी तो अज्ञानी को भी रहती है, सभी को रहती है। अज्ञान दशा की शांति का क्या करना है? यदि उसे बाज़ार में बेचने जाएँ तो चार आने भी न मिलें। वह तो, कुत्तों को भी रहती हैं, दो पूड़ियाँ खाने के बाद।

प्रश्नकर्ता : वह अशांति तो आने वाली शांति थी न? वह तो टेम्परेरी थी न दादा?

दादाश्री : वैसी शांति हमें भी हमेशा नहीं रहती। जब कोई परेशानी आती है, तब वापस अशांति हो भी जाती है। बाकी, मेरी वह दशा अलग ही थी! उस दशा का तो वर्णन ही नहीं हो सकता। उसके लिए शब्द ही नहीं हैं न?

प्रश्नकर्ता : अर्थात् स्टेशन पर दादा का वह आनंद ही अनोखा था न! बिल्कुल अलग ही आनंद था न! लेकिन आनंद का अनुभव तो हुआ होगा न, दादा? दादा अलग हो गए उस समय का आनंद ही अलग था न? या ऐसा कुछ नहीं हुआ?

दादाश्री : वे ज्ञाता-दृष्टा परमानंद सभी गुणों सहित अलग हो चुके थे। देह में नहीं, वचन में नहीं, मन में नहीं, ऐसे अलग ही हो गए थे। वह बात ही अलग है! उसे 'ज्ञान होना' कहते हैं, 'ज्ञान पाना' कहते हैं! ज्ञान ही आत्मा है।

दादा की अपार करुणा

अत: ऐसी भावना करना कि 'दादा'! ये जन्म, दो जन्म जो भी हैं, उनमें आप अपने साथ ही रखना और यह भक्ति देना। एक घंटे दादा के पास बैठने की कीमत कितनी है? समझने वाले की समझ से। नासमझ के लिए तो उसकी हैसियत के अनुसार कीमत होगी लेकिन समझ वालों के लिए कितनी कीमत होगी?

प्रश्नकर्ता : दादा ऐसा कहा था न कि, आपके पास बैठने से ही पूरे हिन्दुस्तान के सारे तीर्थ यहीं है, उन तीर्थों की यात्रा की हो, उस यात्रा से भी ज़्यादा फल आपके पास बैठने से, आपके दर्शन करने से मिलता है।

दादाश्री : इसकी वैल्यू नापी नहीं जा सकती। जितनी समझ होगी, उतना लाभ उठाएगा। हमें तो ऐसा कुछ नहीं है कि लाभ देना है या लेना है। हमारी तो ऐसी भावना है कि, जो सुख हमें मिला है, वही सुख जगत् को प्राप्त हो। बाकी वीतराग थे, हम तो खटपटियाँ वीतराग हैं। खटपट इतनी ही है कि हम जैसा सुख प्राप्त हो। सभी को प्राप्त करवाएँगे, उसके बाद जाएँगे। जिस तरह से मछली तड़पती है, वैसे तड़प रहा है पूरा जगत्। साधु-संन्यासी, बावा-बावी सब, जैसे मछली तड़पती है, वैसे तड़प रहे हैं। वह सब मुझे दिखाई भी देता है लेकिन क्या करूँ? मेरी इच्छा बहुत है इसलिए उन्नासी की उम्र में भी कितने घंटे काम करता हूँ?

प्रश्नकर्ता : अठारह घंटे, दादा।

दादाश्री : अठारह घंटे काम करता हूँ और एक भी दिन छुट्टी नहीं। दिवाली के दिन तो बल्कि मुझे ज़्यादा काम रहता है।

कीमत समझने के बाद छोड़ेगा नहीं

अब आलस में समय खोने जैसा नहीं है, सालों यों ही बीत गए। इस दर्शन की कितनी वैल्यू है? जब तक इस दर्शन की वैल्यू समझ में नहीं आएगी तब तक स्वाद् नहीं आएगा। समझ में आने पर ही स्वाद् आएगा! पच्चीस अरब का हीरा समझ में आए तो उतना ही आनंद होता है। 'इसकी कीमत पाँच अरब है', अगर ऐसा समझ में आए कि वही हीरा पाँच लाख का है तो उतना आनंद होगा। समझ में आना सरल बात नहीं है क्योंकि कई तो बचपन में मेरे साथ ही रहे हैं न, तो नवकार मंत्र का अर्थ भी मैंने सिखाया था, छोटे थे तब। अब, जब कभी अमरीका जाना होता है, तो उनके यहाँ रहना होता है। जब भी जाएँ तब कहते हैं, 'हमारे यहाँ रुकना,' लेकिन उन्हें यह पूरी तरह समझ में नहीं आता न? यह जो स्वरूप है, वह यदि पूर्ण रूप से समझ में आ जाए, कि यह अलौकिक स्वरूप है... लोगों ने सुना न हो, पढ़ा न हो, जाना न हो, ऐसा स्वरूप है। इसे समझना बहुत कठिन है न! यदि समझ में आ जाए तो जो माँगे वह मिले ऐसा है। इसलिए इस दर्शन करने के लिए तो बल्कि अमरीका से आएँगे और आप कहते हो कि जब टाइम मिलेगा, तब आएँगे? और क्या? यह तो जिन्हें समझ नहीं है ऐसे बच्चे ही इसे छोड़ देते हैं।

जिन्हें कीमत समझ में आ जाए, वे हमसे मिलने के बाद छोड़ते ही नहीं।

अमूल्य के दर्शन नहीं चूकना कभी भी

आपको यह सब पसंद आया क्या?

प्रश्नकर्ता : पसंद, नापसंद चीज़ ही कहाँ रही? आपके ऐसे दुर्लभ दर्शन हो गए हमें।

दादाश्री : कल्याण हो गया।

प्रश्नकर्ता : आपके दर्शन से मेरे आत्मा का कल्याण हो गया, मैं ऐसा मानता हूँ।

दादाश्री : इस दर्शन से ही हो जाता है। यह दर्शन करना आना चाहिए। हम भी भगवान के दर्शन करते हैं। जानते हो क्यों करते हैं? हम भीतर इन साहब को नमस्कार करते हैं, किसलिए? क्योंकि चौदह लोक के नाथ प्रकट हुए हैं जो अत्यंत कल्याणकारी हैं। पूरे कलियुग का नाश करने वाले हैं। कलियुग में सतयुग का भान करवाते हैं। जैसा सतयुग में भी नहीं था, वैसा भान करवाते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, आप यहाँ पर पाँच दिन रहिए।

दादाश्री : कुछ समय में ऐसा टाइम आएगा कि आपको दो घंटे ही मिलेगे। सिर्फ हमारे दर्शन ही करने को मिलें तब आप धन्यभाग मानेंगे।

यह अक्रम विज्ञान इतना अधिक फलदाई है, एक मिनट का टाइम भी कैसे खोएँ? फिर ऐसा जोग किसी जन्म में नहीं आएगा इसलिए इस जन्म में पूरा कर लेना है।

प्रश्नकर्ता : दादा, यह पूरा कर लेने को कहा, वह किस तरह?

दादाश्री : जब तक हम हैं, तब तक और कहीं टाइम नहीं बिगाड़ना चाहिए। हम बड़ौदा जाएँ और जिसे अनुकूल संयोग हों और पैसे हों तो, उन्हें वहाँ पर आना चाहिए। जितना हो सके उतना अधिक हमारा समय लेना। सिर्फ हमारे सत्संग में आकर बैठे रहना। और कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है!

प्रत्यक्ष से मिलना ही काम निकाल दे

प्रकट का महत्व इसीलिए है कि उन्हें देखते ही भीतर शक्तियाँ प्रकट हो जाती हैं। सिर्फ, उनके दर्शनमात्र से ही शक्तियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। प्रकट को देखते ही उस रूप बन जाते हैं।

जिन्होंने हमारे प्रत्यक्ष दर्शन किए हैं, उन्हें हमारे बाद भी प्रकाश मिलता रहेगा। जब तक हम हैं तब तक लोगों का काम हो जाएगा उसके बाद कुछ नहीं मिलेगा। प्रकट का महत्व है।

आत्मज्ञानी को देहधारी परमात्मा के रूप में जान। पूर्व के ज्ञानी कह गए हैं कि 'ज्ञानी पुरुष' देहधारी रूप में परमात्मा हैं इसलिए वहाँ पर काम निकाल लेना। 'ज्ञानी पुरुष' के अंदर ही आत्मा प्रकट हुआ है, जो जानने जैसा है। तुझे आत्मा जानना हो तो 'ज्ञानी पुरुष' के पास जा। दूसरा कोई भी शास्त्र या पुस्तकों का आत्मा नहीं चलेगा। पुस्तक के अंदर केन्डल का चित्र बनाया हो, वह दिखता ज़रूर है कि केन्डल ऐसा होता है परंतु उससे उजाला नहीं होता। उससे कुछ होता नहीं है। आत्मा जानने के लिए तो प्रत्यक्ष 'ज्ञानी पुरुष' से भेंट होनी चाहिए, तभी 'काम' होता है।

हमेशा साथ रहने वाले दादा खोज निकालो

प्रश्नकर्ता : आपकी उपस्थिति में बहुत शांति रहती है लेकिन बाहर जाने के बाद बहुत अवरोध रहते हैं।

दादाश्री : पाँच आज्ञा वह मेरी उपस्थिति ही है। ये आज्ञाएँ मेरी प्रत्यक्ष उपस्थिति जितना ही फल देती हैं इसलिए जिन्हें इन आज्ञाओं में रहना है उन्हें कुछ भी नहीं छू सकता। जिसे इस संसार में उलझना है, उसे परेशानी है।

प्रश्नकर्ता : दादा लेकिन अभी भी व्यवहार में बहुत उलझन में पड़ जाते हैं।

दादाश्री : कर्म के उदय तो आएँगे ही लेकिन उस समय यदि आज्ञा में रहे तो सभी उलझनें खत्म हो जाएँगी। आज्ञा तो बहुत बड़ी चीज़ है। भीतर आज्ञा में थोड़ा बहुत रह पाते हो क्या?

प्रश्नकर्ता : रह पाते हैं दादा, थोड़ा-थोड़ा रह पाते हैं।

दादाश्री : वर्ना किसमें रहते हो? व्यवहार धक्का मारकर आज्ञा भुलवा देता है।

बाकी ये पाँच आज्ञा तो ऐसी है कि किसी भी जगह पर और किसी भी समय सर्व समाधान दे। ये रहेंगी तो समाधान रहेगा। अर्थात् यह आपकी सेफसाइड है, कम्पलीट सेफसाइड!

बहुत आसान हो गया है यह, यदि बात को समझे तो! यह ज्ञान मिलने के बाद बिल्कुल आसान है। अब आपको शास्त्र पढ़ने की भी ज़रूरत नहीं है। इन पाँच आज्ञाओं का यदि पालन करें तो बहुत है। आपका पुरुषार्थ है इसलिए अब पालन हो सकता है। उसमें अंतराय डालने वाले कारण भी हैं, उसके लिए मैं मना नहीं करता। पिछले परिणाम अभी बाकी हैं। वे धक्का मारते रहेंगे लेकिन हमें जागृत रहना है। प्रतिक्रमण करते रहेंगे तो जागृति रहेगी। जितनी जागृति उतना फल मिलेगा। संपूर्ण रूप से जागृति ही केवलज्ञान है।

कोई पाँच आज्ञा का पालन करता है तो वह हमारी प्रत्यक्ष हाज़िरी है! प्रत्यक्षपना सूचित करता है। फिर ये दादा अमरीका चले गए तो उससे हमें क्या लेना देना? हमें पाँच आज्ञा देकर गए हैं फिर कैसी उलझन? वे खुद ही हैं न!

प्रश्नकर्ता : ये स्थूल दादा चले जाएँगे, तब हम क्या करेंगे? इस प्रश्न का दादा यह जवाब दे रहे हैं।

दादाश्री : हाँ, हमें तो ऐसा खोज निकालना है कि दादा हमेशा साथ रहें। ये दादा तो छिहत्तर साल के हैं। कब देह छूटे और लुढक पड़ें, क्या भरोसा? इसके बजाय हमेशा के दादा ढूँढ निकाले हों तो फिर कोई उलझन रही? फिर भले ही सौ साल जीएँ, हर्ज नहीं है। लेकिन हमें अपना ढूँढ निकालना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादा, आप तो अपने पास आने वाले को कितना अधिक निरालंब बना देते हैं!

दादाश्री : और क्या करें? हिंमत तो रखनी चाहिए न। आपको स्थिर रहना चाहिए न! आज्ञा का पालन किया तो बैठने का स्थान मिल गया, बस!

काम निकाल लेना, किस तरह?

प्रश्नकर्ता : दादा, जब आपके पास आते हैं तब कई बार आप ऐसा कहते हैं कि 'अपना काम निकाल लो, अपना काम निकाल लो' तो हमें अपना काम किस तरह निकाल लेना हैं?

दादाश्री : काम निकाल लो अर्थात् हम क्या कहते हैं? हम ऐसा नहीं कहते हैं कि आप पूरी तरह से आज्ञा पालन करो। रोज़ ऐसा नहीं गाऊँगा लेकिन हमें 'काम निकाल लो' का मतलब समझ जाना है कि हमें आज्ञा में ज़्यादा रहने का कह रहे हैं, आज्ञा में जागृत रहने का कह रहे हैं। तो हमारा काम निकल जाएगा। परीक्षा में प्रोफेसर क्या कहते हैं? 'ऐसी परीक्षा दो कि मार्क्स न बढ़ाने पड़ें, किसी के पैर न पकड़ने पड़ें।' उसे समझ जाना चाहिए कि ज़्यादा पढ़ाई करनी चाहिए। सबकुछ पद्धतिपूर्वक होना चाहिए। काम निकाल लो, मैं इस तरह से कहना चाहता हूँ।

ऐसा है कि यदि इन आज्ञा का पालन करेगा न, तो काम निकाल लेगा। जब तक तीर्थंकर हाज़िर रहते हैं, तब तक शास्त्र-धर्म-तप के लिए मना करते हैं। वे जो आज्ञा दें, उन आज्ञा में ही रहना। आज्ञा ही मोक्ष में ले जाएगी। उसी तरह, हम अभी शास्त्र पढ़ने के लिए मना करते हैं। आज्ञा पालन करना न, काम हो जाएगा।

काम निकाल लेना यानी हमारी आज्ञा में ठीक से रह पाते हो तो दो-चार महीनों में एकाध बार आकर दर्शन करने से चलेगा और यदि नहीं रह पाते हो तो रोज़ यहाँ आकर बार-बार दर्शन कर जाना।

ज्ञानी के पास खुद अपने ही दर्शन करना

अब, जितना आप इन पाँच आज्ञा का पालन करोगे, उतनी ही जमा होंगी। दूसरा, ज्ञानी पुरुष के बार-बार, जब-जब ज्ञानी पुरुष के दर्शन, चाहे कहीं भी हों, तो पाँच सौ, हज़ार खर्च करके भी वहाँ पर दर्शन कर आना। यदि आपके नज़दीक कहीं आए हुए हों तो हो सके उतना, पैसा खर्च करके भी, दर्शन करने अवश्य जाना। हम एकदम से आशीर्वाद देते हैं न। यह तो, अनंत जन्मों का नुकसान एक ही जन्म में बराबर करना है कितने जन्मों का नुकसान है?

प्रश्नकर्ता : अनंत।

दादाश्री : अनंत जन्म हुए, उसका नुकसान इस एक जन्म में बराबर करना है इसलिए ज्ञानी पुरुष के दर्शन मत चूकना। रात में जागरण करके, रात भर जागकर भी, दर्शन कर लेना। अर्थात् पहला, जितनी आज्ञा पालन करोगे उतना जमा होगा। दूसरा, यदि दर्शन करेंगे तो ज़बरदस्त रकम जमा होगी।

ये दर्शन वर्ल्ड का आर्श्चय कहलाते हैं। यह तो ग्यारवाह आश्चर्य है!

-जय सच्चिदानंद।

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

14-19 सितम्बर : पूज्यश्री की सत्संग यात्रा की शुरुआत सिंगापुर से हुई, सिंगापुर के महात्माओं ने उल्लासपूर्वक पूज्यश्री का स्वागत किया। पहले दिन आप्तपुत्र सत्संग में मुमुक्षुओं को अक्रम विज्ञान की जानकारी मिल। 15 तारीख को ज्ञानविधि में 94 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। स्थानीय महात्माओं ने मलेशिया, इन्डोनेशिया और हॉंगकॉंग से आए नए महात्मा व मुमुक्षुओं के लिए, एक वर्कशॉप का आयोजन किया।

17 से 19 सितम्बर : सिंगापुर में तीन दिन के शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें सिंगापुर, मलेशिया, इन्डोनेशिया, अमरीका और भारत से आए महात्माओं ने शिविर में हिस्सा लिया। सिंगापुर और मलेशिया के महात्मा, बच्चों और युवाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। मलेशिया के महात्माओं द्वारा दादाई पद पर स्थानीय नृत्य 'दीकीर बरत' प्रस्तुत किया गया। पूज्यश्री को भी कार्यक्रम में वहाँ की स्थानीय पोशाक पहनाई गई। शिविर के दौरान 'आप्तवाणी-1' का पारायण और 'सेवा' पर विशेष सत्संग हुए। महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ इन्फॉर्मल समय बिताया, जिसमें बीच पर योगा, पूज्यश्री के साथ मॉर्निंग वॉक जैसे कार्यक्रम हुए। इस शिविर में गरबा, MMHT और WMHT सत्संग का आयोजन हुआ। व्यक्तिगत मार्गदर्शन मिलें, इस हेतु से दादा दरबार का आयोजन हुआ।

21-23 सितम्बर : न्यूज़ीलैन्ड के सब से बड़े शहर ऑकलैन्ड में श्री शिरडी साँई मंदिर में सत्संग व ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ।। GNC के बच्चों द्वारा पूज्यश्री का स्वागत हुआ। सत्संग में लगभग 350 महात्मा उपस्थित थे। वहाँ 170 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। स्थानीय महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ इन्फॉर्मल समय बिताया जिसमें लगभग 140 महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ क्रूज़ में बोटिंग का आनंद उठाया। इस कार्यक्रम के दौरान महात्माओं को पूज्यश्री के साथ भोजन, एवम् व्यक्तिगत मार्गदर्शन के लिए दादा दरबार का लाभ प्राप्त हुआ।

25-25 सितम्बर : ऑस्ट्रेलिया के गेरीगोंग (सिडनी) में स्थानीय महात्माओं के लिए सत्संग व शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें ऑस्ट्रेलिया के विविध शहरों और यू.के., यू.एस.ए और भारत से आए लगभग 310 महात्माओं ने हिस्सा लिया। ऑस्ट्रेलिया में हुई अब तक की शिविरों में सब से ज़्यादा उपस्थिति इस शिविर में रही। GNC के 80 बच्चों ने पूज्यश्री का स्वागत किया। शिविर में पूज्यश्री के आप्तवाणी-1 पर पारायण और 'लक्ष्मी का व्यवहार' पर सत्संग हुआ। शिविर के दौरान MMHT, WMHT, YOUTH और GNC के लिए सत्संग, भक्ति, गरबा और व्यक्तिगत उलझनों के समाधान के लिए 'दादा दरबार' का आयोजन हुआ। महात्माओं को पूज्यश्री के साथ वेरी बीच पर वॉक का लाभ प्राप्त हुआ। आंतिम दिन सेवार्थी सत्संग हुआ।

28 सितम्बर से 1 अक्तूबर : सिडनी में सत्संग और ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। ढोल और बैन्ड द्वारा पूज्यश्री का भव्य स्वागत किया गया। पूज्यश्री द्वारा दादा के विज्ञान पर आधारित प्रदर्शन का उद्घाटन किया गया। यह प्रदर्शन 5P पर आधारित था, जिसमें 'प्रेम, पॉज़िटिविटी, प्रिन्सिपल ऑफ मनी, प्रतिक्रमण और प्रत्यक्ष ज्ञानी' के अलावा युवाओं द्वारा साइन्स एक्सपेरिमेन्ट्स, गेम्स कॉर्नर आयोजित हुए। सत्संग में लगभग 1000 महात्मा व मुमुक्षुओं की उपस्थिति रही। इसके अलावा सीमंधर स्वामी की शोभायात्रा और प्राणप्रतिष्ठा हुई। GNC के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ। ज्ञानविधि दौरान 310 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। अंतिम दिन पूज्यश्री के साथ लगभग 400 महात्माओं ने इन्फॉर्मल समय दौरान क्रूज़ का आनंद उठाया। कईं महात्माओं ने अपने ज्ञान के अनुभव बताए।

2-7 अक्तूबर : पर्थ में स्थानीय महात्माओं ने एयरपॉर्ट पर पूज्यश्री का हार्दिक स्वागत किया। सत्संग में 225 महात्मा व मुमुक्षुओं की उपस्थिति रही और ज्ञानविधि दौरान 70 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पर्थ के महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ इन्फॉर्मल समय बिताया। जिसमें क्रूज़, फोटो सेशन, गरबा, बीच पर मॉर्निंग वॉक जैसे कार्यक्रम रखे गए। महात्मा पूज्यश्री के साथ मिन्ट देखने गए जहाँ बताया गया कि खान में से सोना निकल कर कैसे शुद्ध किया जाता है। व्यक्तिगत उलझनों के समाधान हेतु 'दादा दरबार' का आयोजन किया गया। 7 तारीख को सुबह पूज्यश्री पर्थ से भारत आने के लिए रवाना हुए।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

2 दिसम्बर (रवि),**पूज्य नीरुमा के जन्मदिन पर विशेष कार्यक्रम**

सुबह 6-30 से 8-15, **प्रभातफेरी, प्रार्थना-विधि** तथा रात 8-30 से 10-30 - **भक्ति**

23 से 30 दिसम्बर - पारायण - आप्तवाणी 13 (उ.) (पेज. नं 388)से, **आप्तवाणी 14 - भाग-1** पर

सुबह 10 से 12-30, शाम 4-30 से 7-30 - **सत्संग-सामायिक**

2 जनवरी (रवि), **परम पूज्य दादाश्री की पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम**

शाम 4-30 से 6-30, **किर्तन भक्ति** तथा रात 8-30 से 10 - **महात्माओं के दादाजी के साथ अनुभव**

चेन्नई

8 दिसम्बर (शनि) शाम 6-30 से 9-30 - **सत्संग** तथा **9 दिसम्बर** (रवि) शाम 4-30 से 8 - **ज्ञानविधि**

स्थल : अन्ना ऑडिटोरियम, भारतीय सर्जन असोसिएशन, टी.वी. टावर के सामने, चेपॉक, चेन्नई.

10 दिसम्बर (सोम) शाम 6-30 से 9-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : उमा सूरज पेलेस, अंगलमैन कोइल स्ट्रीट, चोलई, चेन्नई.

कार्यक्रम संबंधी तथा आवास की सुविधा के लिए **संपर्क :** 6369138166, 7904394945

मुंबई

9 फरवरी (शनि) शाम 6 से 9 - **सत्संग** तथा **10 फरवरी** (रवि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

स्थल : निर्मल लाईफ स्टाईल मोल, LBS मार्ग मुलुंड (वेस्ट) **संपर्क :** 9323528901

राजकोट

16-17 फरवरी - सत्संग - ज्ञानविधि (समय और स्थल की जानकारी के लिए संपर्क : 9323528901 **)**

जामनगर

22 फरवरी (शुक्र) शाम 6 से 9 - **सत्संग** तथा **23 फरवरी** (शनि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

स्थल : व्रजभूमि-1 के सामने, TGES स्कूल के पास, माणेकनगर, राजकोट रोड. **संपर्क :** 9323528901

जामनगर त्रिमंदिर का प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

दि. 24 फरवरी 2019 (रविवार)

प्राणप्रतिष्ठा : सुबह 9-30 से 1 तथा **प्रक्षाल-पूजन-दर्शन-आरती :** शाम 4-30 से 7-30

स्थल : व्रजभूमि-1 के सामने, TGES स्कूल के पास, माणेकनगर, राजकोट रोड, जामनगर. **संपर्क :** 9323528901

विशेष सूचना : प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम केवल एक दिन का है, इसलिए रात्रि आवास की सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाएगी।
जो महात्मा-मुमुक्षु उसी दिन सीधे ही महोत्सव स्थल पर पहुँचेंगे, उनके लिए बाथरूम-टोइलेट की सुविधा स्थल पर रहेगी।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557

अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830080820

यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232),**ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

नवम्बर 2018
वर्ष-14 अंक-1
अखंड क्रमांक - 157

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/36/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

जोवा जेवी
दुनिया
— देखने जैसी दुनिया

परम पूज्य दादा भगवान
१११वीं जन्मजयंती महोत्सव

१५ से २५ नवम्बर, २०१८
त्रिमंदिर, अडालज, जि. गांधीनगर

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई देसाई के सानिध्य में ज्ञानी पुरुष परम पूज्य दादा भगवान की १११वीं जन्मजयंती अडालज त्रिमंदिर में 'देखने जैसी दुनिया' के नाम से एक भव्य महोत्सव के रूप में से मनाई जाएगी। इस अमूल्य अवसर का लाभ उठाने के लिए आप सभी को भावपूर्ण निमंत्रण है।

इस दिव्य अवसर पर परम पूज्य दादा भगवान द्वारा दी गई गहन, फिर भी सरल समझ का विविध आध्यात्मिक सत्संगों, मल्टी-मीडिया शो, प्रदर्शन, सांस्कृतिक कार्यक्रम व वर्कशॉप के माध्यम से प्रस्तुत किया जाएगा।

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.